भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902
डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 8 | अंक 13 | उदयपुर शनिवार 15 जुलाई 2023 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

लोक और लोकविज्ञान

- राजेन्द्ररंजन चतुर्वेदी -

मालिक-नौकर, बड़ा-छोटा, वकील-व्यापारी, प्रोफेसर-उद्योगपति, नेता आदि बाह्य उपाधियां या छिलका हैं, इनके भीतर जो सामान्य मनुष्य है, वह लोक है। लोक केवल वर्तमान नहीं है, वह सुदूर अतीत से भविष्य तक की निरन्तरता है। शास्त्र आसमान में जाकर बसता है, यह ठीक है किन्तु उसका स्रोत समुद्र अर्थात् लोकजीवन का अनुभव ही है। घाट पर होकर ही गंगा के प्रवाह में अवगाहन किया जा सकता है लेकिन घाट घाट है और गंगा गंगा है। घाट जहां है वहीं रहता है किन्तु गंगा प्रवाहशील है।

उपनिवेशों के जमाने में लोकवार्ताशास्त्री आदिम मानव को लोकवार्ता का केन्द्रीय तत्व मानते थे। वे मानते थे कि जंगली, आदिवासी, अर्धसभ्य, असभ्य, गंवार, अशिक्षित ही फोक हैं।

भारत में भी पहले ग्रामसाहित्य या आदिवासी साहित्य को ही लोकसाहित्य समझा जाता था। इसमें भला क्या सन्देह है कि ग्रामसाहित्य या आदिवासी साहित्य लोकसाहित्य है, क्योंकि उसमें लोक की बड़ी सहज अभिव्यक्ति होती है किन्तु ग्रामजन या आदिवासी ही लोक हो ऐसी बात नहीं है। आज हम लोक के अन्तर्गत सर्वजन समष्टिजन, सामान्यजन और जीवन की अविच्छिन्नता और निरन्तरता का अध्ययन करते हैं। सामूहिक मानस, समष्टिचेतना, समष्टिहित, वाचिक परम्परा, लोकजीवन समष्टिजीवन है और लोक का अनुभव समष्टिजीवन का अनुभव है।

तब जब वह अनुभव तेरा, मेरा, इसका-उसका, सबका अनुभव बन जाता है तब उसे समष्टि का अनुभव कहते हैं। लोकसंस्कृति असभ्य और अर्द्धसभ्य, आदिवासी, ग्रामीण या निरक्षर लोगों की ही संस्कृति है या उन लोगों का ज्ञान-विज्ञान ही लोकवार्ता है, यह दकियानूसी बात अब पुरानी पड़ गई है। लोकवार्ता शास्त्रियों ने ही यह निष्कर्ष दिया कि लोकमानस की गति अलौकिक की ओर होती है और वह किसी महत्त्व की बात को चमत्कार गढ़ कर सुरक्षित रखता है।

मनुष्य की उस सत्ता का नाम लोक है जहां जाति-पांति, ऊंच-नीच, गरीब-अमीर, शासक-शासित, स्त्री-पुरुष, धर्म-सम्प्रदाय तथा क्षेत्रीयता के सभी बन्धन खुल जायं। मालिक-नौकर, बड़ा-छोटा, वकील-व्यापारी, प्रोफेसर-उद्योगपति, नेता आदि बाह्य उपाधियां या छिलका हैं, इनके भीतर जो सामान्य मनुष्य है, वह लोक है।

आचार्य वासुदेवशरण अग्रवाल ने कहा था कि लोक हमारे जीवन का महासागर है। इसमें समस्त जनसमुदायों का अन्तर्भाव है। शतसहस्त्र मानव जातियां जो आज धरती पर हैं वे भी और जो आज नाम शेष हैं वे भी लोक के महासागर में समायी हुई हैं। लोक केवल वर्तमान नहीं है, वह सुदूर अतीत से भविष्य तक की निरन्तरता है। लोक समुद्र की तरह है। अन्तर्धाराएं टकरा रही हैं। लहरें टकरा रही हैं। टकराने की प्रक्रिया के साथ ही एक और प्रक्रिया भी चल रही है। वे लहरें टकराती हैं और टकराकर उसी समुद्र की अथाह गहराई में समा जाती हैं।

यह बात भूलने की नहीं है कि शास्त्र का जन्म भी लोक में ही होता है। उसकी प्रतिष्ठा भी लोक में होती है। लोक के द्वारा होती है। लोक समुद्र है और शास्त्र मेघ। लोकजीवन महासमुद्र की भांति है। शास्त्र आसमान में जाकर बसता है, यह ठीक है किन्तु उसका स्रोत समुद्र अर्थात् लोकजीवन का अनुभव ही है।

कुछ अध्येताओं ने 'शास्त्र में' अहंचैतन्य और 'लोक' में समष्टि चैतन्य को देखा है। कुछ लोकवार्ताविदों ने लोक को गांव और शास्त्र को नगर माना है। पुराने मानवविदों की दृष्टि में लोकवार्ता असभ्य, अर्द्धसभ्य, जंगली, आदिवासी, मूढ़, अपढ़, निरक्षर, गंवार और अज्ञानी तथा असंस्कृत लोगों का ज्ञान था। अनेक मनोविज्ञानी लोकमानस में आदिम-मानस को खोजते हैं। अनेक कलाविद शास्त्र में लालित्य तथा लोक में अनगढ़ को देखते हैं। कुछ समाजशास्त्री शास्त्र को शासक-वर्ग के अस्त्र के रूप में देखते हैं तथा लोक और शास्त्र उनमें वे मुनिमानस और जनमानस का वही द्वन्द्व देखते हैं जिसे समाजशास्त्री समाज में वर्ग संघर्ष के रूप में पहचानते हैं।

कुछ समाजशास्त्री कहते हैं कि शास्त्र बांधता है और लोक उन्मुक्त करता है जबकि कुछ समीक्षकों ने शास्त्र में वैदिक परम्परा और लोक में आगम-परम्परा को चिन्हा है। कुछ विचारक 'शास्त्र' में तर्क और 'लोक' में श्रद्धाभाव का साक्षात्कार करते हैं। किसी की दृष्टि में शास्त्र सिद्धान्त, आदर्श तथा लोक व्यवहार है। कुछ इतिहासविदों ने शास्त्र में 'आर्य' और लोक में 'अनार्य' को खोजा है जबकि अन्य कई आलोचकों ने वर्ण और जाति की दृष्टि से शास्त्र और लोक के पौरोहित्य को पहचानने का प्रयास किया है।

लोकसंस्कृति की दिशा व्यष्टि से समष्टि, शास्त्र से लोक, विशेष से सामान्य और सत्ता से जन की ओर है। संस्कृति को समझने के लिए लोकवार्ता के अध्ययन के बिना कोई दूसरा विकल्प नहीं है। लोक की जीवन्त भाषा का उदाहरण- गरम पानी तो गरम पानी ही है किन्तु कितना गरम है, इसके लिए लोक में बहुत शब्द हैं। जैसे- चरचरौ, भभकतौ, गुनगुनौ, फुकतो, सुहातो, ठण्डे पानी के लिए.. कंटान, गरन्त काँटै सो। झगड़े के लिए हमारे पास कितने शब्द हैं..धक्कामुक्की, कहासुनी, लैलै दैदै, चेंचमचेंचा, हाथापाई, बाजगयी, फौजदारी, लठालठी, गटापटी, तकरार, मनचाल, महाभारत, जूझ गये पमाड़ौ आदि।

नींद के लिए शब्द हैं.. ओंघा, घंघेला, झपकी, घैरघुट्ट, कुंभकरनी। महर्षि पतंजलि ने अपने महाभाष्य में भाषा-प्रयोग के सम्बन्ध में दो सूत्र दिय हैं- लोकतः प्रमाणम्। लोकविज्ञानाच्च सिद्धम। भाषा किताब में नहीं, लोकजीवन में रहती है। इसी प्रकार से संस्कृति भी किताब में नहीं लोकजीवन में रहती है। ये दोनों सूत्र भाषा के लिए तो महत्त्वपूर्ण हैं ही, मानवजीवन के प्रत्येक व्यवहार में सिद्ध हैं।

एक-दो विश्वविद्यालयों की तो मुझे जानकारी भी है, जिनमें उसे इतना संकीर्ण बना दिया गया है कि विद्यार्थी गंगा के घाट को ही गंगा समझ लेता है। उसे शायद वहां के आचार्य ने ही नहीं जाना कि लोकविज्ञान विश्वमानव के अध्ययन का विज्ञान है। घाट पर होकर ही गंगा के प्रवाह में अवगाहन किया जा सकता है लेकिन घाट घाट है और गंगा गंगा है। घाट जहां है वहीं रहता है किन्तु गंगा प्रवाहशील है। जीवन भी प्रवाहशील है परन्तु अब वह दिन दूर नहीं कि जब लोकविज्ञान को स्वतंत्र अनुशासन का दर्जा मिलेगा।

रानी के संकल्प

- डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' -

पाटन में पड़ा अकाल! पशुओं को लेकर चरवाहे नर्मदा को नापने निकले और व्यापारियों ने ऊंटों को साज लिया। बच्चे क्या करते! बाप अपने जायों को बेचने निकले और माएं क्या करतीं। हाथ पग चूल्हे में देने को तैयार लेकिन हांडी में कोई दाना तो पकने को तैयार हो! ना आकाश को रहम आए और न धरती दया उगले! पाटण का तो डांटण ही हो गया!

दिन दुश्मन जैसा लगता। धूप सुबह से ही सूखा डालने जैसे तेवर लेकर पसरती जाती थी। जब तब भतूलिए उठते और सबको ही खाने का भभड़का उठता। कहीं से खबर आती थी कि कोई सतुआ बांट गया है या कोई मुट्ठी भर चने फैंक गया है। कभी पता लगता था कि भूंगड़ों से भरे मोटक लुट गए।

मुंहअंधेरे नारियों के मुंह फूट जाते। जब जिसका घर वाला चल पड़ता, रुदन मच जाता। कोई बिना बताए पाटन छोड़ जाता और कोई सोया का सोया रह जाता! कोई किसी को उठाने आगे नहीं आता। घुटनों में ताकत ही नहीं बची। घर घर मसान मचा था!

अकाल अभी अकेला नहीं आता। छह छह पीड़ा साथ लाता है! कोई मौत से कम नहीं। तब बैठ बेगार और ली जाती। बेगार न करने वालों के लिए कोप भवन खोल दिए जाते। रोजाना कान उमठाए जाते!

नारी मन को नारी ही जानती। महारानी उदयमती तक रोजाना बात जाती थी लेकिन, उपाय क्या था! ईश्वर का आसरा परंतु कैसे और कब तक! रानी ने अपने महल की राणकुई को गहरा करवाया तो पानी अच्छा मिल गया। उसने सोचा कि यह जलधारा महलों की अपेक्षा प्रजा के लिए ज्यादा

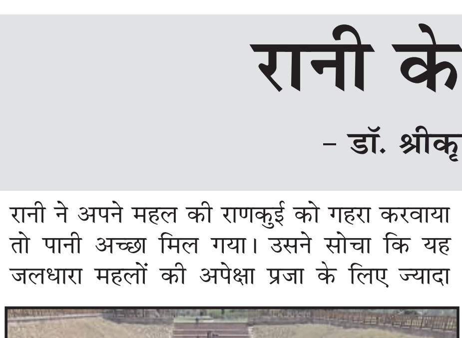

जरूरी है किंतु पानी भरने कोई नहीं आता था! पानी पिलाने को एक पौ बिठा दी! एक खेलकी चौपायों के लिए भरी जाती!

रानी पौ फटने से पहले खुद छकड़े पर ललतई कपड़ों से ढके पानी भरे मटके लेकर निकलती थी और हर घर जाकर महिला को आवाज देती - पानी खूट गया हो तो ले लो! महिलाएं द्वार खोलकर बाहर आती और जयकारा कर मटका भर ले जाती! पाटन में पानी अमृत जैसा हो गया! वेदना में भी महिलाएं रानी के पानी का गान करतीं -

राणी पावै पाणी, गंगाजी पाटन अवतरी!

एक रात कब बादल आए, पता नहीं लेकिन खूब पानी बरसा लेकिन रानी बैचेन थी। पानी रानी के मन में आशा के अंकुर जगा गया। अब मेरे लिए कौन गायेगा! अब तो सबको सहज पानी मिल जायेगा लेकिन, उसने प्रधानजी से कहा कि मेवाड़ जाओ! सरवाले हरवो को लाओ और बावड़ी के बराबर जलधारा का पता लगाओ। पाताल फूटे और गले की हांसल जैसा झांझराए तो जानो कि नाम उदयमती!

ऐसा ही हुआ! ऊंठी दौड़े। मेवाड़ से हरवा और मालवा से ओड आए। सोमनाथ से सूत्रधार, सगोड़ा से सलावट, चित्तौड़ के चेजारा, भरोड़ के भारिए, बंका के बांस और राणका के रस्सिए। पलक पड़े तो टंक तड़े! राई राई, आंगल आंगल, गज गज और पुरुषा पुरषा पहाड़ को बौना करता बाव का काम चला।

रानी ने संकल्प किया कि जब तक बावड़ी के लिए पानी नहीं आता, वह चरणामृत जितना ही जल लेंगी! प्रजा चकित थी। श्रमिक ने रात नहीं देखी। पानी की शिराएं जल्दी ही मिल गईं! पग पग पानी! समंदर दानी!

रानी ने नया संकल्प किया - जब तक बावड़ी पक्की ना बंधेगी, वह महल को छोड़कर कुटी में ही रहेगी! तब कुटी साधन किसी कल्प से कम नहीं था। बारह बरस तक अगला अकाल पड़े तब तक रानी कुटी में ही रहीं। अणोदरी, अनशन, वास, अनबोल्या, ऊबथाक, एकपगां, ऊबहूक जैसा विचार होता, रानी व्रत ठान लेती! जीवड़ी जोड़े बावड़ी! रानी काया कलपावे और मजूर हाथ पग चालावै!

हजार हाथ काम करते रहे! बैठकी भूमि होने से काम लगातार चला! रहटों, कावडों और जल्गियों से पानी तोड़ा जाता रहा। पत्थर रज रज रजत होते गए। रानी सुबह-सुबह देवदर्शन करती थी और शिल्पकार हर दर्शनीय देवता को बावड़ी पर साकार करते जाते! राजमहल की बातों को भी पत्थर में चित्रपटीदार किया गया। वाव क्या बनी, मंदिर ही बन गया! उल्टा मंदिर। नर की नारी और नारी की वारी (बाव)!

(भारतीय जलस्रोत : श्री कृष्ण जुगनू)

सूचना

डॉ. भानावत परिवार का नया निवास 352, श्रीकृष्णापुरा की बजाय फ्लैट नं. 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास, मुनि सुव्रतस्वामी जैन मंदिर परिसर, न्यू भूपालपुरा, उदयपुर है।

पोथीखाना

मड़ई-2022 का लोकायन

मड़ई-2022 का लोकजनित रेखांकन अनेक छात्रों, शिक्षाविदों तथा शोधार्थियों का उपयोगी लेखांकन ही है। अब ऐसी पत्रिकाएं, ऐसी संस्थाएं तथा ऐसे समर्पित साधक कहां मिलेंगे? वह समय हमारे देखते-देखते हवा हो गया जब देवीलाल सामर, कोमल कोठारी, रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत, विजयदान देथा जैसे राजस्थानी सपूत एकनिष्ठ समर्पण लिए काम कर रहे थे।

मध्यप्रदेश में रामनारायण अग्रवाल, डॉ. पूरन सहगल, उत्तरप्रदेश में अग्रवाल रामनारायण, डॉ. विद्याविन्दुसिंह, महाराष्ट्र में मालती शर्मा, हरिणाया में डॉ. शंकरलाल यादव, गुजरात में झवेरचन्द मेघाणी ; और भी कई नाम हैं जिन्होंने अपने बूते पर लोक का लेखांकन किया।

समय के बदलते प्रवाह में अब वैसा लोक, वैसा समाज, वैसा मनुष्य, वैसा सोच और वैसा भावनानिष्ठ समाज भी नहीं रहा। पहले समष्टि सबकुछ थी। अब व्यष्टि मात्र है। सिनेमा, टीवी से भी आगे मोबाईल, वाट्सअप, ईमेल जैसे द्रुतगामी, धनाधन-टनाटन साधन प्रकृति को भी बेंधते बढ़े जा रहे हैं। कब क्या कुछ आगे होने वाला है, कोई भी नहीं बता सकता।

ऐसे में मड़ई हमारे आत्मविश्वास का दरिया है जो लगातार हमें अतीतोन्मुखी हवाओं से ताजगी देती यह एहसास कराती है कि चाहे कितने ही महल मालिया धरती के आंगन को अंगीरस बनालें, राहगीरों के आते-जाते शुभ-मंगल के सूचक राम-राम करने वाली मड़ई लोक के दिलों के दरवाजों को दस्तक देती रहेगी।

प्रस्तुत अंक में जितनी भी रचनाएं सम्मिलित हैं उनमें लोकपक्ष का यही भाव उजागर हुआ है। सर्वाधिक लेख ही लोक को समझने, समझाने, साझा करने तथा साधारण से असाधारण एवं असाधारण से साधारण होने का साधारणीकरण है।

लोकविज्ञान पर राजेन्द्ररंजन चतुर्वेदीजी ने पाश्चात्य विद्वानों की नासमझी की नकेल खींचते उनके जूठन का परोसा लेने वाले भारतीय विद्वानों की आंखें खोलते उन्हें भारतीय दृष्टि से भारत और भारतीयता को समझने की लोक-दृष्टि प्रदान की है। उन्होंने लोक की आंखों से लोक के आलोक को दृष्टिबन्ध करते जमीनी स्तर की चौपाल पर सबके साथ बैठकर सलाह सिरमौरी है और जो विश्लेषण दिया है, वही हमारा असली लोकांकन है।

ऐसे ही श्याम बाबू ने लोक पर पुनर्विचार किया है। रामनाथ शिवेन्द्र ने लोकतंत्र की लोकचेतना पर अपना मत सम्मत दिया है तो डॉ. रश्मि दीक्षित ने इक्कीसवीं सदी के लोक के मानवीय मूल्यों की पड़ताल का सोच उकेरा है। राजस्थान से सांझी का उत्स बताते डॉ. कहानी भानावत ने लोकमहाभारत बगड़ावत में आई कथा का शोधन करते 'खुड़-खुड़ रे म्हारा खोड्या जंवाई, थूं संज्या ने लैवण आयो रे' बालिकाओं की गीत-पंक्ति से सांजी, संज्या, संजुल उत्सव की स्मृति-संरचना का उठान दिया और इसी विषय पर पीएच.डी. की उपाधि ली है।

अवध, पंजाब, छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश जैसे विविध प्रान्तों की लोकजनित सांस्कृतिक धारा प्रवाहिनी रसावली का लोकानन्द भी विभिन्न विद्वानों ने बड़ी गम्भीरताई के साथ किया है। बिलासपुर की रावत नाच महोत्सव समिति का जैसा आयोजन लोक में प्रतिवर्ष छिटकता है, मड़ई स्थायी रूप से उस लोक के विविध उदात्त एवं अनिवार्य पक्षों को अमूल्य दस्तावेजों की तरह संरक्षण, संवर्धन दे रहा है, यही हमारा आपका सबका सौभाग्य है।

- डॉ. महेन्द्र भानावत

पुरुषार्थ को मुखर करने वाले मुखर पुरुषार्थी

अपने पुरुषार्थ को हर व्यक्ति मुखर नहीं कर सकता। इसके लिए साधनामय सम्पूर्ण जीवन होम देना पड़ता है। राजसमंद के देवेन्द्र भाई कर्णावट ने अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी के सान्निध्य में अणुव्रत को जो व्यापक धरातल दिया उससे वे अणुव्रत महारथी ही बन गये।

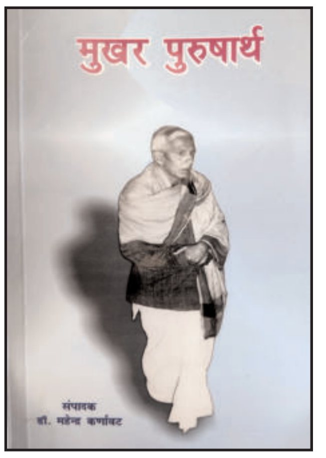

आचार्य तुलसी ने लिखा भी- ''क्रान्तिकारी विचारक, प्रखर वक्ता और उदीयमान लेखक, सामाजिक और राजनैतिक गतिविधियों में सक्रिय किन्तु धार्मिक प्रवृत्तियों में उदासीन, स्वतंत्रता संग्राम में निरन्तर संभागिता पर साधु-साध्वियों के सम्पर्क से दूर। देवेन्द्रजी की मां की भावना थी कि उनका बेटा धर्मसंघ के लिए भी कुछ काम करे। इच्छा न होने पर भी वह मां का मन रखने के लिए गंगाशहर आ गया।''

यह सन् 2000 की बात थी। उसके बाद देवेन्द्र जुड़े तो ऐसे जुड़े कि अणुव्रत आन्दोलन के प्रथम हस्ताक्षर हो गये। आचार्यश्री लिखते हैं- ''देवेन्द्र एक ऐसा व्यक्ति जिसने अणुव्रत को पढ़ा, लिखा, अणुव्रती कार्यकर्त्ता बना, अणुव्रत समिति का अध्यक्ष बना, अणुव्रत प्रवक्ता बना और अणुव्रत पुरस्कार प्राप्त किया। मेरापंथ धर्मसंघ की अभिनव क्रान्ति में जिसका अकल्पित और अचिंतित योगदान रहा। अणुव्रत के बारे में जिसकी नई कल्पनाएं और नये सपने हैं। अणुव्रत के लिए सर्वात्मना समर्पित कर्मशील व्यक्तित्व है देवेन्द्र।''

इसमें त्रि-आचार्य तुलसी, महाप्रज्ञ तथा महाश्रमण के अलावा अनेक ख्यातिलब्ध स्वतंत्रता सेनानी, समाजसेवी, साहित्यकार, साधक, अणुव्रतसेवी तथा देवेन्द्रजी से जुड़े मित्र, स्नेही साथी एवं परिवार जनों ने अपनी भावना का मुखर अक्षर दिया है।

मुखर पुरुषार्थ में देवेन्द्र कर्णावट के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को लेकर विभिन्न जनों के लिखे 60 आलेख संकलित हैं। इसका सम्पादन डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने देवेन्द्रजी के जन्मशताब्दी वर्ष पर किया है। गांधी सेवा सदन राजसमंद से 2023 में प्रकाशित यह कृति पाठकों को कई तरह से प्रेरित करने में सार्थक होगी।

-डॉ. तुक्तक भानावत

वीआईएएफटी के छात्रों के परिधान पहन रैंप पर उतरे देश के जाने माने मॉडल्स

-इजिप्ट, मुगल, ग्रीक, राजपूताना और विक्टोरियन थीम पर आधारित रहा फैशन शो-

डॉ. तुक्तक भानावत। लेकसिटी का सबसे बड़ा फैशन शो इल्युमिनाती-2023 मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय के स्वामी विवेकानंद सभागार में आयोजित किया गया। साईं तिरूपती यूनिवर्सिटी के वैंकटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी एंड मास कम्युनिकेशन (वीआईएफटी) की ओर से आयोजित इस फैशन शो में देश की ख्यात मॉडल्स ने रेम्प पर वॉक किया। फैशन शो की थीम इजिप्ट, मुगल, ग्रीक, राजपूताना और विक्टोरियन थी।

फैशन शो का शुभारंभ सांई तिरूपति विवि के कुलपति डॉ. जे. के. छापरवाल तथा निदेशक अव्य अग्रवाल, ने किया। प्रारंभ में वीआईएफटी के विद्याथियों ने गणेश वन्दना प्रस्तुत की। शो के कोरियोग्राफर एवं डिजाइनर गगन कुमार एवं अजय नायर थे।

संघ चेयरपर्सन आशीष अग्रवाल ने बताया कि उदयपुर में फैशन को लेकर खासा टेलेंट है। जरूरत है तो सिर्फ उसे तराशने की। संस्थान के विद्याथियों ने इस समारोह को लेकर कई दिनों पूर्व ही तैयारी शुरू कर दी थी। वीआईएफटी की हमेशा यह कोशिश रहेगी कि वे विद्याथियों को बेहतरीन प्लेटफार्म उपलब्ध कराएं।

शो में इजिप्ट थीम पर इजिप्टियन कल्चर और आर्किटेक्ट को परिधानों के माध्यम से उकेरा गया। जिनमें हेंड प्रिंटिंग, हल्के कलर, पीयोर गोल्ड कलर, लाइट पेस्टल टोंस फेब्रिक, इजिप्टियन फेब्रिक, पेचेज ऑफ हेंड वर्क, साटन से तैयार किये गये आकर्षक डिजायनर वस्त्र एवं ज्वेलरी पहने जब मॉडल्स रैंप पर उतरी तो सभी ने तालियों की गडगड़ाहट के साथ उनका स्वागत किया।

इसके बाद मुगल थीम पर भारतीय परिधानों घाघरा, लहंगा, घरारा को मुगलकालीन कल्चर के अनुरूप महरून, लाल, चटक गुलाबी रंगों के साथ मॉडल्स ने जब रैंप वॉक किया तो मुगलकालीन परिधानों का ऐरा जीवंत हो उठा जिसे दर्शकों ने खूब सराहा।

तत्पश्चात ग्रीक थीम पर ग्रीस की रूसिंग और रस्ट फेब्रिंक को हल्के नीले और ग्रे कलर में षॉर्ट ड्रेसेज को प्रस्तुत किया गया जिसे खूब सराहना मिली।

इसके बाद राजपूताना और विक्टोरियन राउण्ड में राजस्थान के गौरव और संस्कृति को प्रस्तुत करते प्रदेश के ओथेंटिक परिधानों में गोटा, जरी, सिल्क, ब्रोकेड फेब्रिक और लहरिया से बने परिधानों को जब जानीमानी मॉडल्स ने रैंप पर पहनकर कैटवॉक किया तो राजस्थानी संस्कृति जीवंत हो उठी।

सभी राउंड में ज्वेलरी सेटअप और मैकअप को लेकर खासी मेहनत दिखाई दी जिसने दर्शकों को ज्वेलरी में ताजापन का अहसास करवाया। शो के डिजाइनर मुंबई के गगन कुमार और उदयपुर कोरियोग्राफ़र अजय नायर ने थीम बेस्ड और परंपरागत कोरियोग्राफी के साथ ड्रामा, इमोशन को जीवंत करते हुए लाइट और म्युजिक का शानदार इस्तेमाल किया। वीआईएफटी के विद्याथियों ने लेटेस्ट और ट्रेंडी परिधानों से रू-ब-रू करा फैशन को जीवंत कर दिया। इस दौरान विद्याथियों की एक के बाद एक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया।

समारोह में बेस्ट स्टूडेंट्स मिस्टर इल्युमिनाती-2023 का अवार्ड नवदीप जैन, मिस इल्युमिनाती-2023 मुस्कान वहीं रनरअप प्रतापसिंह और मिताली कुमावत रहे। बेस्ट डिजाइनर मुस्कान बानो, नंदिनी दुग्गड, रीना पालीवाल, योगिता, अनुष्का, आयुषि, आशा, समरिन, वैष्णवी, प्रियल, रजत, आस्मां, किरण, महिमा, अनम, दीक्षा, इंसिया, सिद्रा और भावना को दिया गया। इल्युमिनाती-2023 में मिस फोटोजेनिक पूनम कंवर, मिस्टर फोटोजेनिक रिजवान खिलजी, मिस सोंटेर बेस्ट वॉक प्रिया कुमावत, मिस्टर सोंटेर बेस्ट वॉक यश कोटडिया, मिस रेडियेंट बेस्ट स्माइल तेजस्विनी जैन, मिस्टर रेडियेंट बेस्ट स्माइल अभिषेक सिंह, मिस्टर हेयरडू मो. अमन, मिस हेयरडू यूविका गहलोत, मिस मेग्निफिशियंट शालू चौहान, मिस फ्लोलेस कसक खतूरिया, मिस्टर हंक विपूल सुखववाल, मिस चार्मिंग श्रेष्ठा शर्मा, मिस डेजलिंग सुहानी नेनवा, मिस्टर रेविसिंग अमन खान, मिस रेविसिंग पूजा, मिस्टर परफेक्ट काव्य भट्ट, मिस्टर स्टड पंक मकानी को दिया गया। संचालन निश्चय सोनी एवं हिमांशी चौबीसा ने किया।

इल्युमिनाती-2023 फैशन शो में वीआईएफटी के छात्रों ने शीतल अग्रवाल के निर्देशन में विभिन्न गतिविधियों में अपनी छाप छोड़ी। शो में वीआईएफटी की निदेशक डॉ. रिमझिम गुप्ता, प्रिंसिपल विप्रा सुखवाल, नरेन गोयल, प्रकाश शर्मा, देवर्षि मेहता, निशांत परवीन, पूर्णिमा शर्मा, मानसी जैन, वर्षा शर्मा, तनुजा अजरिया, ओमपाल, प्रो. पीयूष जवेरिया, सावन दोशी, शशि प्रजापत, मुकेश, दीपेश मेनारिया एवं मोहसीना बानो का विशेष योगदान रहा।

हर व्यक्ति की जिव्हा पर मां लक्ष्मी विराजमान : राज दीदी

उदयपुर (ह. सं.)। हर व्यक्ति की जिव्हा पर माँ लक्ष्मी विराजमान है। ये विचार नारायण रेकी सत्संग परिवार, उदयपुर की ओर से टाउन हॉल में आयोजित 'जीवन जीने का नया अंदाज' कार्यक्रम में मुख्य वक्ता ग्रैंड मास्टर नारी रत्न श्रीमती राजेश्वरी मोदी, 'राज दीदी' ने व्यक्त किये। उदयपुर सेंटर हेड गुणवंती गोयल व उनकी सहयोगी अंकिता अग्रवाल ने बताया कि राज दीदी के अब तब देश-विदेश में 175 के करीब सत्र आयोजित हो चुके हैं। संस्थान के 46 सेंटर भारत में और सात विदेश में संचालित हैं।

राजेश्वरी मोदी ने कहा कि विचार, वाणी, व्यवहार की शुद्धता ही बेहतर जीवन का निर्माण करती है। कोई क्रेडिट दे या ना दे अपना सर्वोत्तम देना जारी रखे, हर्ट न हों क्योंकि हर्ट सबसे निम्नतर की ऊर्जा है जो आपके जीवन में आते हुए सुख, शांति, समृद्धि को रोकती है।

राज दीदी ने कहा कि जीवन की भाग दौड़ व तेज गति में किसी का भी हक ना लें। अपने निर्मल मन व सहज स्वभाव से जीवन को आसान बनाया जा सकता है। अनेक प्रश्नो के उत्तर में उन्होंने कहा कि स्नेह सब पर खूब बरसायें। स्नेह व समर्पण से हम लोगो का विश्वास जीतते हैं जो हमें जीवन पर्यंत खुशियां देता है।

राज दीदी ने कहा कि भारत वर्ष में लाखों लोगों का नारायण रेकी सत्संग परिवार से जुड़ कर उनके जीवन की गुणवत्ता में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है। परिवर्तन व गुणवत्ता की यह प्रक्रिया भारत व दुनिया में नारायण रेकी सत्संग परिवार के माध्यम से जारी है। इस अवसर पर राज दीदी ने जीवन जीने के मंत्र के पांच सूत्र भी सबसे साझा किये। संचालन गुणवंती गोयल तथा धन्यवाद अंकिता अग्रवाल ने ज्ञापित किया।

स्मृतियों के शिखर (168) : डॉ. महेन्द्र भानावत

एकलिंगजी के बहाने कवि हेमबिहारी और सास-बहू की सुध

कैलाशपुरी स्थित एकलिंगनाथजी के मन्दिर में एक छत्र सोने का है। एकलिंगनाथ के वर्षों तक सेवाधारी रहे कविवर हेमबिहारीदास वैष्णव ने 1989 के सितम्बर माह में अपने निवास की ऊपरी मंजिल में महाकाव्य 'मानस मंथरा' के सन्दर्भ का जिक्र करते बताया कि कैलाशपुरी के इन्द्रसागर तथा बाघेला तालाब बड़े पवित्र माने जाते हैं।

हेमबिहारी ने संख्यात्मक विवेचन करते तीन पर्वतों के नामों में अर्बुद गिरि जिसे स्वर्गद्वारी भी कहते हैं। दूसरा भतृहरि गिरि जिसे हारीत गिरि नाम से जाना जाता है और तीसरे भाकुर गिरि का उनके वैशिष्ट्य के साथ नामोल्लेख किया।

एकलिंगनाथजी की चतुर्मुखी प्रतिमा ब्रह्मा, विष्णु, महेश और सूर्य की प्रतीक है। चार दिशाओं की दृष्टि से सोचें तो पूर्व दिशा विजय की, पश्चिम दिशा ज्ञान की, उत्तर दिशा लक्ष्मी की और दक्षिण दिशा काल की सूचक है। काल अच्छे वक्त का सूचक नहीं होकर बुरे वक्त का समै कहा जाता है। यम भी इसी दिशा में निवास करते हैं।

नाथों के नाथ : श्री एकलिंगनाथ

यों सिसोदियों में बारह लिंग की पूजा का विधान है। मीरां के पति भोजराजजी ने चित्तौड़ में जगह-जगह लिंग स्थापित करवाये। वे शिवोपासक थे। एक चतुर्भज लिंग वे ऐसी जगह स्थापित करवाना चाहते थे जहां तीर्थ के रूप में लोगों का निरन्तर आवागमन बना रहे लेकिन वे ऐसा नहीं कर पाये।

कहा जाता है कि बाद में जब राणा प्रताप ने गादी सम्भाली तो वह लिंग यहां एकलिंगजी के मन्दिर में स्थापित करवाया। प्रताप का बनवाया हुआ यह पहला मन्दिर कहा जाता है और यहीं प्रताप ने इन्हीं एकलिंगनाथजी के श्रीचरणों में बैठ अपना सारा राजपाट उनके श्रीचरणों में समर्पित कर कहा- 'राज म्हारा सूं ना संभाल्यो जावे। लोग मार्‌या जावेगा। आप ही मालिक हो' अर्थात् राज मेरे से सम्भाला नहीं जायेगा। लोग मारे जायेंगे। आप ही स्वामी हो। यह कह प्रताप ने श्रीएकलिंगनाथजी की दीवानी धारण कर ली तब से जो भी राणा बना वह श्रीएकलिंगनाथ का दीवान ही बना रहा। अपने को कभी राणा नहीं माना।

मन्दिर के पांच शिखर हैं जिन पर जुदा-जुदा पांच ध्वजाएं हैं। एकलिंगनाथजी की पूजा पद्धति के अनुसार भक्तों को उनके बारी-बारी से छह दर्शनों का सौभाग्य मिलता है। ऐसे ही यहां तुलसी, करज, आम्बा दरखत, भैरव, सूरज, तक्षक और गणेशनामी सात कुण्ड हैं।

सास-बहू मंदिर : सतीश मेहता, महेन्द्र भानावत, कविता मेहता और जितेन्द्र मेहता

भगवान एकलिंगनाथजी से जुड़े आठ तीर्थ हैं। उनके नाम हैं- धारेश्वर, तक्षक, बापा रावल, केदार बाबा, बीजासन बाव, इन्द्रसागर, भैरू कुण्ड तथा आम्बा दरखत। नौ दरवाजों में गणेश घाटा, आमल्या पोल, नाल दरवाजा, गणेश पोल, मठद्वारा, पायगा का द्वार, सीताराम द्वार, खिड़की तथा डूंगरेश्वर की पोल। दस भैरूदेव में आमूल्याजी भैरू, ऊमर्याजी भैरू, उदयसागर्याजी, दादर्याजी, खोखर्याजी, भाखर्याजी, भदेसर्याजी, एकपन्या भैरूजी, काल भैरू तथा दसवें कंकाल भैरू अपने-अपने रूप-स्वरूप में अनोखे हैं।

कवि हेमबिहारी

हेमबिहारीदासजी ने बताया कि इन्द्र सरोवर के सम्बन्ध में एकलिंग माहात्म्य में कथा वर्णित है पर लोकजीवन में भीलों की वंशावली रखने वाले भाटों की पोथी में कहा गया है कि इन्द्रजीत नामक राजा के पूरे शरीर में कोढ़ हो गई। एकदिन राजा शिकार के बहाने इधर आया। यहां भीलों के पानी पीने की दो कुइयां थीं। राजा ने पानी पीने से पहले हाथ धोये तो कोढ़ों में ठण्डक महसूस करते स्नान करने से उसकी काया निर्मल हो गई तब एक तालाब बना इन्द्रा भील के नाम इन्द्र सरोवर रख दिया।

इसी इन्द्र सरोवर की पाल पर चार बड़े मन्दिर हैं। दीवालें इतनी बड़ी हैं कि दो घोड़े एकसाथ चल सकते हैं। ऐसी आश्चर्यजनक दीवालें क्यों और कैसे बनाई होंगी। ऐसी भी जनश्रुति है कि मनुष्य की बजाय देवी से विवाह की होड़ में एक राक्षस ने एक ही रात में यह करिश्मा कर सबको चमत्कृत कर दिया।

दूसरी बार 18 जून 2023 को जब मैं हेमबिहारीदासजी के घर गया तो जो घर कच्चा कलूवट था, वह बदला-बदला बमुश्किल मिला। हेमबिहारीजीका निधन तो 1995 में ही हो चुका था। अब तो वहां एक मंजिले पक्के बने मकान में उनकी बेटी-जंवाई रहते हैं। बेटी वीणादेवी ने हेमबिहारीजी लिखित 'एकलिंग गुणगान' नामक पुस्तक मुझे दी जिसमें हेमबिहारीजी ने प्रारम्भ में 108 पद अपने गुरु बालानन्दजी के नाम-छाप के लिखे हैं और शेष 98 पद अपने स्वयं के लिखे हैं।

इन्द्र सरोवर : कमल सरोवर

एकलिंगजी मन्दिर की परिक्रमा पहले होती थी, अब पीछे वाला हिस्सा, परिक्रमा वाला भक्तों के लिए बन्द कर रखा है सो दर्शनों के लिए वंचित है। यही नहीं, पीछे अहाते में होकर ऊपर बना इन्द्र सरोवर तालाब जाने वाला रास्ता भी बन्द कर रखा है। हम मन्दिर के बाहर होकर दरवाजे के रास्ते ऊपर पहुंचे। सरोवर में कमल खिले हैं। मछलियां भी पानी को साफ रखे देखीं। कमल के पत्ते और ऊपर कमल के फूल खिते देख बचपन की याद हो आई जब अपने गांव कानोड़ के कमल वाले तालाब पर नहाने जाता था और कभी-कभी गले तक पानी में डूबी तालाब बीच कांकर पर जाकर नहाता। पानी में 'आउडो के पाउडो' खेल खेलते। कभी कमल का फूल लाने नीचे पानी में गोते लगाते। फूल वाले पत्ते लाते जिन पर पानी की बून्द गिर जाती तो मोती-सी लुढ़कती बड़ी पारदर्शी लगती।

कमल का फूल सूख जाता तो डोड़ा बन जाता जिसमें कमलबीज 'कमल कोंकड़ी' निकाल खाते। ऐसा ही चित्तौड़ के किले पर पद्मिनी महल वाले तालाब में कमल के फूलों से लदा सौन्दर्य देखा। बताया गया कि पद्मिनी रानी इतनी सुन्दर थी कि उसके अंग-अंग से सुन्दरता प्रस्फूटित होती। जब वह पानी का कुल्ला कर तालाब में कुल्ले का पानी डालती तो उससे कमल-ही-कमल खिल उठते। तब की नवम्बर 1984 की की गई उस यात्रा के दौरान जो कमल कोंकड़ी मैंने प्राप्त की वह अभी भी मेरे पास सुरक्षित रखी हुई है जबकि अब उस तालाब में किसी तरह के कमल के फूल होने के कोई चिन्ह नजर नहीं आते।

ऐसा ही कमल सरोवर एकलिंगजी मन्दिर, कैलाशपुरी से सटे प्राचीन स्थल नागदा परिसर में विद्यमान है। यहां भी पूरा तालाब कमल फूलों से बड़ा सुहावना प्रतीत हो रहा है। कोई समय था तब यह क्षेत्र मन्दिर प्रधान संस्कृति लिए था। मन्दिर अब भी खण्डहर के रूप में जगह-जगह देखे जा सकते हैं पर उनमें मूर्तियों की जगह खाली है। किसी मन्दिर के भीतर कोई प्रतिमा नहीं होने से खण्डहरी संस्कृति का दरसाव अवश्य मिलता है। यह दरसाव भी उस समय के मन्दिर का बड़ा ही सुखद कलात्मक चोपड़ा ही है।

हां, सास-बहू मन्दिर अब खण्डहर रूप में ही सही, राज्य सरकार की देखरेख में है हालांकि अब भी इक्केदुक्के परिवार उसे देखने आते हैं। यह मन्दिर ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ का है। मन्दिर के बाहर चारोंओर जो मूर्तियां लगी हुई हैं वे उस कालखण्ड की मन्दिर-संस्कृति का वैभव लिए है।

सास-बहू मंदिर का बाह्य मूर्ति शिल्प

इधर खजूर वृक्षों की बहुतायत भी देखने को मिली। अनेक वृक्ष खजूर फल से लदे बड़े खूबसूरत खजुराहो ही लग रहे थे। विद्वानों की नजर में सास-बहू का मन्दिर सहस्त्रबाहु ही अधिक हो गया है पर लोक में तो सास-बहू ही इसके सांचे सिक्के हैं। अपने एक घण्टे के दौरान मैंने देखा भी कि कुछ नवोढ़ी बहू अपनी सास के साथ इस मन्दिर के दर्शनार्थ दूर प्रदेश से आई और प्रतिमा नहीं होते हुए भी धोक-दर्शन कर कृतार्थ हुई।

उदयपुर से अल्पावधि की इस संक्षिप्त यात्रा में मेरे साथ मेरे दोनों बड़े-छोटे बेटी-जंवाई डॉ. कविता-डॉ. सतीशजी मेहता तथा डॉ. कहानी-जितेन्द्रजी मेहता को मैंने बताया कि इतिहास खोजी डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' के अनुसार सास-बहू के मन्दिर की परम्परा देश के अनेक भागों में विद्यमान है। यही नहीं, सास-बहू के साथ जेठानी-देवरानी के मन्दिर भी मिलते हैं। ये मन्दिर कहीं बहू ने तो कहीं देवरानी ने बनाये हैं। ऐसे युगल मन्दिर हमारे पारिवारिक स्नेह सौजन्य तथा आत्मीय सौहार्द के आदर्श हैं।

महावीर रवांल्टा गोविन्द चातक पुरस्कार से सम्मानित

देहरादून में 30 जून को उत्तराखण्ड भाषा संस्थान द्वारा आयोजित समारोह में दीर्घकालीन उत्कृष्ट साहित्य सृजन एवं अनवरत साहित्य सेवा के लिए महावीर रवांल्टा को 'गोविन्द चातक पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। रंगकर्म एवं लोकसाहित्य में गहरी रूचि के चलते महावीर

रवांल्टा रंग लेखन, अभिनय एवं निर्देशन के साथ-साथ हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन के अतिरिक्त रवांई और रवांल्टी को लेकर भी निरंतर सक्रिय रहे हैं। इसी सक्रि यता के चलते उनकी रचनाएं देशभर से प्रकाशित होने वाली विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, आकाशवाणी व दूरदर्शन के माध्यम से लोगों तक पहुँचती रही हैं। कहानी, कविता, उपन्यास हों या नाटक व लोककथाएँ सभी में रवांई का परिवेश एवं माटी की महक तथा भाषाई सौष्ठव प्रमुखता से मुखरित होता रहा है। रवांल्टी लोककथा-गाथाओं का नाट्य रूपांतरण करते हुए उन्हें एक वृहद व व्यापक फलक देने का रवांल्टा जी ने जो सफल व साहसिक प्रयास किया है।

-दिनेश रावत

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 15 जुलाई 2023

सम्पादकीय

बदलाव जल और वायु का

पंच तत्व पृथ्वी, आकाश, जल, अग्नि और वायु में मुख्य तत्व जल और वायु है। आकाश वायु से अटा है और अग्नि को जल मेट देता है। जल पृथ्वी पर सर्वाधिक हिस्से में फैला हुआ है और यही स्थिति आकाश में वायु की है।

सभी जीवों के लिए हवा-पानी मुख्य है। अधिक वर्षा से जल प्लावन हो जाता है और अधिक हवा से भी आंधी अंधड़ तूफान ऐसा मचता है कि सब ओर त्राहि-त्राहि मच जाती है और जीवन दूभर हो जाता है।

अतिवृष्टि और अनावृष्टि तथा अतिवायु और अनावायु दोनों जीवन-जगत को तबाह कर देते हैं। वर्षों बाद इस समय जल-वायु में बेढ़ंगा परिवर्तन हुआ है जिससे पूरी प्रकृति और मानव चरमरा गया है। प्रतिकूल मौसम होने से सब चीजें अपनी-अपनी जगह से, अपने-अपने अनुशासन से इधर-उधर हो गई हैं।

कहते हैं ऐसा बेढ़ब परिवर्तन केवल हमारे देश में ही नहीं, पूरे विश्व में हुआ है। वर्षों में जो ताल-तलैया, नदी-सरोवर खाली थे वे उफनकर फनकार देते खतरे के निशान से ऊपर रपटियां भर रहे हैं। मौसम की शुरूआत में ही पूरे मौसम ने अपना रंग दिखा दिया है।

इससे प्रकृति के सारे उपादान ही नहीं बदले, उसके कार्यकलापों के साथ मनुष्य के सरोकारों में भी परिवर्तन आ गया है। जाहिर है, इससे जो नुकसान हुआ है वह कल्पनातीत है। यों यहां प्रलय तो समय-समय पर बहुत हुए, पर महाप्रलय कभी नहीं हुआ फिर भारत देवताओं की भूमि है सो जितनी डरावनी है उतनी ही संरक्षणा भी।

जेईई की तैयारी के लिए स्वस्थ और तनाव मुक्त वातावरण देना फीटजी का लक्ष्य

उदयपुर (ह. सं.)। जेईई एडवांस में फीटजी के छात्रों के शानदार प्रदर्शन पर फीटजी ने जश्न मनाया। इस वर्ष फिटजी क्लासरूम प्रोग्राम के छात्रों ने जेईई एडवांस 2023 में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया जिसमे शीर्ष 10 में 3 स्थान और शीर्ष 100 में 32 स्थान हासिल किए। फीटजी के सभी कार्यक्रमों में, फिटजी के छात्र आल इंडिया रैंक में शीर्ष 10 में 3 छात्र और शीर्ष 100 में 37 छात्र हैं रहे । फिटजी नें अपने क्लासरुम प्रोग्राम को आधुनिक तरीके से डिजाइन करते हुए छात्रों को तनाव मुक्त माहौल प्रदान करने और दवाबमुक्त माहौल के अनुरूप बनाया है. परंपरागत कोचिंग सेंटर से हटकर फिटजी की इस पहल को सहराया जा रहा है और छात्रों के साथ साथ अभिभावकों ने भी इसका समर्थन किया है ।

फिटजी ग्रुप के निदेशक आर एल त्रिखा ने कहा कि जेईई में हमारे छात्रों की सफलता छात्रों में सर्वश्रेष्ठ लाने में फिटजी के तनाव-मुक्त दृष्टिकोण की प्रभावशीलता का प्रमाण है। हम एक ऐसा वातावरण प्रदान करने में गर्व महसूस करते हैं जो हमारे छात्रों के पोषण के साथ-साथ उनकी भलाई को प्राथमिकता देता है। शैक्षणिक विकास, हमारे विचार और प्रार्थनाएँ जेईई और एनईईटी के लिए सबसे प्रसिद्ध कोचिंग केंद्रों वाले अन्य क्षेत्रों के छात्रों के लिए हैं, जो अपनी तैयारी के दौरान अत्यधिक दबाव और चुनौतियों का सामना करते हैं। त्रिखा ने कहा कि फिटजी तनाव-मुक्त शिक्षा और प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं के लिए समग्र व्यापक तैयारी प्रदान करने में सफलतापूर्वक अग्रणी बना हुआ है। उत्कृष्टता के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता, व्यक्तिगत ध्यान, स्वस्थ सीखने के माहौल में केंद्रित मार्गदर्शन ने लगातार असाधारण परिणाम दिए हैं।

धर्मक्षेत्रे : यात्रा मथुरा-वृंदावन की (2)

-अर्थांक भानावत-

वृन्दा की नगरी वृन्दावन में श्रावण मास में बालकृष्ण ललन लाल को झुलाने के लिए हिंडोला

उत्सव प्रारंभ हो जाता है। ये लाल इतने स्वरूपवान हैं कि उनके लिए तरह-तरह के उतने ही सुन्दर एक-से-एक बढ़कर हिंडोले बालकृष्ण को झुलाते देखने भक्तों की भीड़ देखते ही बनती है। खासतौर से रात्रि को रंगबिरंगी रोशनियों से लकदक मन्दिर भगवान और झूलों-हिंडोलों की शोभा द्विगुणित-शतगुणित हुई मिलती है। इन दिनों आसपास के ही नहीं, पूरे विश्वभर के भक्तजन इन मन्दिरों में देखने को मिल जायेंगे।

वृन्दावन के द्वारिकाधीश के मन्दिर में तो एक स्वर्णजड़ित तथा दो रजतजड़ित हिंडोले मिलेंगे। ये विशालकाय हिंडोले बल्देव और जतीपुरा के जुदा-जुदा इसलिए भी हैं कि इनमें ठाकुरजी का अचल विग्रह होने से उन्हें प्रतिमा के माध्यम से हिंडाया जाता है।

यों यहां हरियाली तीज से ही मेला भरना शुरू हो जाता है। हिंडोलात्सव भी इसी दिन से शुरू हो जाता है। यों हर मन्दिर में ही हिंडोले देखे जा सकते हैं पर बांकेबिहारीजी के मन्दिर का हिंडोलात्सव बड़ा ही बांका नजर आता है। खासतौर से सोने का हिंडोला तो वर्ष में केवल एकबार ही दिखाई देता है। यह हिंडोला अकेला मात्र हिंडोला नहीं है, इसके आसपास मानवाकृति लिए सखियां रहती हैं जो स्वर्ण-रजत निर्मित होती हैं। लगती हैं जैसे वे स्वयं अपने ललन लाल को झूला रही हैं। इसी दिन वर्ष में एकबार घेवर तथा फेंनी का प्रसाद चढ़ाया जाता है।

यहां का राधारमण मन्दिर भी कम ख्यात नहीं है। यहां तो हिंडोले का क्रम प्रथम तीन दिन सोने का, फिर अगले तीन दिन चांदी का और शेष पूर्णिमा तक के दिनों में फूल-पत्ती के हिंडोले डाले जाते हैं। राधा दामोदर मंदिर में इस्कान के प्रवाक प्रभुपाद को श्यामाश्याम से साक्षात्कार हुआ था। इस मंदिर में काष्ठ का हिंडोला पड़ता है। इस मंदिर की चार परिक्रमाओं में उत्तर को दक्षिण से जोड़ने वाली रंगजी मंदिर में चांदी का तथा शाहजी के मंदिर में सोने का हिंडोला डाला जाता है।

राधा रानी की क्रीड़ा भूमि बरसाना के लाडलीजी महाराज मंदिर में सोने के हिंडोले की सवारी निकाली जाती है। वृषभान मंदिर, दादीबाबा मंदिर, अष्टसखी मंदिर, मोरकुटी मंदिर, गोपालजी मंदिर तथा जयपुर मंदिर भी हिंडोलें के लिए जाने जाते हैं। नंदगांव के नंदबाबा के मंदिर का हिंडोला उत्सव भी अपनी निराली अहमियत रखता है।

सवेरे उठते ही हमने हमारे धाम में ही नाश्ता किया। हमारा टैक्सी ड्राइवर बाहर ही हमारी प्रतीक्षा में खड़ा था। सामान चढ़ाकर हमने 15 अप्रेल 2023 को बरसाना के लिए प्रस्थान किया। कुछ विद्वान मानते हैं कि राधाजी का जन्म यमुना के निकट बसे स्थित रावल ग्राम में हुआ था और बाद में उनके पिता बरसाना में बस गए। इस मान्यता के अनुसार नन्दबाबा एवं वृषभानु का आपस में घनिष्ठ प्रेम था। कंस के द्वारा भेजे गये असुरों के उपद्रवों के कारण जब नन्दराज अपने परिवार, समस्त गोपों एवं गोधन के साथ गोकुल-महावन छोड़ वृंदावन में निवास करने लगे और जब कृष्ण 6 साल के थे तब नन्दगाँव में निवास करने लगे, तो वृषभानु भी अपने परिवार सहित उनके पीछे-पीछे इस गाँव को त्याग कर चले

आये और नन्दगाँव के पास बरसाना में आकर निवास करने लगे। इसी प्रकार कृष्ण और राधा की मुलाकात हुई। कृष्ण की तरह ही राधा के जीवन में भी अलग-अलग पुराणों में असंगति है पर अधिकतर लोगों की मान्यता हैं कि बरसाना में उनका जन्म हुआ था।

बरसाना पहुंचकर हमने पदयात्रा शुरू की क्योंकि वृंदावन की तरह ही बरसाना में गाड़ी-घोड़ों की सरकार द्वारा अनुमति नहीं है। पदयात्रा के बाद

15 मिनट सीढ़ियों पर चढ़ान करते हुए हम बरसाना के बाज़ार घूमे। मम्मी ने घर के लिए वहां से कुछ सामान खरीदा। यहां सभी मंदिर की अंदरूनी बनावट और मूर्तियां एक ही तरह की हैं। बरसाना का श्री राधा रानी का मंदिर वृन्दावन के श्री बांकेबिहारी के मंदिर की तरह ही था। यहां भी चढ़ावे और श्रृंगार की चीजों के दाम देखकर हमने महसूस किया कि धर्म को भी यहां एक धंधा बना दिया गया है। यहां से उतरते वक्त हमने उत्तरप्रदेश की प्रसिद्ध फेटी हुई लस्सी और मलाई माखन का भोग किया और नंदगांव के लिए प्रस्थान किया।

नंदगांव मथुरा जिले का प्रसिद्ध पौराणिक ग्राम बरसाना के पास एक बडा नगरीय क्षेत्र है। यह नंदीश्वर नामक सुन्दर पहाड़ी पर बसा हुआ है। यह कृष्ण भक्तों के प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है। किंवदंती के अनुसार यह गांव भगवान कृष्ण के पिता नंदराय द्वारा एक पहाड़ी पर बसाया गया था। इसी कारण इस स्थान का नाम नंदगांव पड़ा। गोकुल को छोड़ कर नंदबाबा श्रीकृष्ण और गोप-ग्वालों को लेकर जब श्रीकृष्ण 6 साल के थे तब वृंदावन छोड़ नंदगांव आ बसे। यहां भी बरसाना की तरह ही मंदिर दर्शन करने के लिए हल्की पदयात्रा के बाद 15 मिनट की सीढ़ियों को पार किया। मंदिर के भीतर गोपीनाथ, नृत्यगोपाल, गिरधारी, नंदनंदन और माता यशोदा की मूर्तियां हैं। श्रीकृष्ण ने नंदगांव के पहाड़ के ऊपर से गोमाता को चारा चढ़ाया और इसीलिए उनका नाम पड़ा गोपाल और आज भी यहां गोमाता को चारा चढ़ाने की बोली लगती है। लोग इसे परमपुण्य मानकर यह सेवा करते हैं। सभी मंदिरों में से नंदगांव में सबसे कम भीड़ का सामना हुआ और इससे हम काफी संतुष्ट थे।

अर्थांक, शब्दांक, रंजना और तुक्तक भानावत

जब कृष्ण 7 साल के थे तब उन्होंने नंदगांव में रहते हुए ही गोवर्धन पर्वत को अपनी कनिष्ठा पर उठाकर नंदगांव के वासियों की रक्षा की। गोवर्धन के रास्ते में जाते हुए हम इंतजार करते रहे कि कब गोवर्धन पर्वत की स्मृति दिखेगी। फिर हमें पता चला कि जिस मिट्टी के टीले को हम देख रहे थे वही गोवर्धन पर्वत था। गोवर्धन पर्वत की आधी परिक्रमा में तो वह दृश्यमान भी नहीं था कारण कि पर्वत की परिधि पर कई घर और छोटे कस्बे स्थित थे । इस पहाड़ की समय के साथ दर सिर्फ 80 फीट रह गई है। इससे हमें थोड़ी निराशा हुई पर हमारे ईरिक्शा ड्राइवर ने हमें गोवर्धन के 5 पड़ाव दिखाए।

उनमें से पहला पड़ाव था पिछड़ी का लौटा, एक मंदिर-कम तबेला जिसमें गोधन अंदर-बाहर इंसानों के साथ चल रहे थे। दूसरा, मुखारबिंद एक विशाल पत्थर के आसपास स्थित मंदिर है और उस पत्थर में श्री गिरिराज की प्रतिमा दिखती है। तीसरा, चुतर टेका एक सामान्य जगह जहा परिक्रमा के बीच विश्राम करना एक रिवाज है। चौथा, उद्धव कुंड। उद्धव श्रीकृष्ण के चाचा देवभाग के लड़के थे जो आयु में श्रीकृष्ण से थोड़े बड़े थे। ऐसा माना जाता है कि उद्धवजी ने द्वारका के महिषियों को इस कुंड पर ही सांत्वना दी थी। आखिरी और सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव, राधाकुंड है। पौराणिक मान्यता के अनुसार श्रीकृष्ण गोवर्धन में गोचारण करते थे। इसी दौरान अरिष्टासुर ने गाय के बछड़े का रूप धरके श्रीकृष्ण पर हमला करना चाहा लेकिन श्रीकृष्ण ने उसका वध कर दिया। राधाकुंड क्षेत्र श्रीकृष्ण से पूर्व राक्षस अरिष्टासुर की नगरी अरीध वन थी। अरिष्टासुर से ब्रजवासी खासे तंग आ चुके थे। इस कारण श्रीकृष्ण ने उसका वध कर दिया था। वध करने के बाद राधाजी ने बताया कि आपने गोवंश के रूप में उसका वध किया है अतः आपको गोवंश हत्या का पाप लगेगा। यह सुनकर श्रीकृष्ण ने अपनी बांसुरी से एक कुंड खोदा और उसमें स्नान किया। इस पर राधाजी ने भी बगल में अपने कंगन से एक दूसरा कुंड खोदा और उसमें स्नान किया। श्रीकृष्ण के खोदे गए कुंड को श्यामकुंड और राधाजी के कुंड को राधाकुंड कहते हैं।

गोवर्धन परिक्रमा को पूरी कर हम बढ़े मथुरा की ओर। गंगा के तट पर चलते उस ऐतिहासिक से रहस्यमय पानी को देखते हमने कंसकिले के दर्शन किए, जो आज एक खंडहर बन चुका है जहां स्कूल के बचे क्रिकेट खेला करते। इस दृश्य को देख में

भयभीत हुआ। इसके बाद हम बढ़े श्रीद्वारकाधीश मंदिर, जो मथुरा के पुराने शहर में सबसे प्रसिद्ध और भव्य मंदिर है। वहा अंदर जाकर हमें नाथद्वारा के श्रीनाथजी की अनुभूति हुई। मेरी मां तो उस मूर्ति में लीन होकर 10 मिनट वहीं बैठी रही।

इसके बाद हम बढ़े विश्रामघाट की तरफ जो मथुरा का सबसे प्राचीन और प्रसिद्ध घाट है। यह मथुरा के 25 घाटों में से एक प्रमुख घाट है। विश्रामघाट के उत्तर में और दक्षिण में 12-12 घाट हैं। यहाँ अनेक सन्तों ने तपस्या की एवं अपना विश्रामस्थल बनाया। विश्रामघाट पर यमुना महारानी का अति सुंदर मंदिर स्थित है। यमुना महारानीजी की आरती विश्रामघाट से ही की जाती है। विश्रामघाट पर संध्या का समय और भी आध्यात्मिक होता है। वहां एक नाव में बैठकर हमने आरती का इंतजार किया। उस नाव पर 25 और लोग थे। आरती चालू हुई और एक ही परिवार की 4 पीढ़ी वहां बड़ी बड़ी मशालें लिए यमुना की आरती कर रही थी। मैंने अपने जीवन के सबसे मंत्रमुग्ध करने वाले दृश्यों में से यह दृश्य देखा।

मथुरा की इस अलग जगह की याद एक अलग अनुभूति लिए हम बढ़े हमारी होटल की ओर जो कृष्ण जन्मस्थली से जुड़ा हुआ था। उस पवित्र भूमि पर विश्राम करते हुए हम अगले दिन के लिए तैयार हुए।

- क्रमशः

रेत के झूंपों में संगीत की स्वर लहरियां देते वादक (4)

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

सुरमंडल :

रेगिस्तानी धरती जैसलमेर के मांगणियारों का सुरमंडल छत्तीस तारों का स्वर-मंडल ही है। शीशम की लकड़ी से बना अपनी लम्बाई ढाई फीट से आधी सवा फीट की चौड़ाई लिये यह वाद्य तार के बने नखले से बजाया जाता है लेकिन अंगुलियों के नख, नाखून से भी बजाया जाता है। इसलिए उस तार को भी नखला कहा जाता है। जब यह छोटा या बड़ा आकार लिये होता है तो तारों की संख्या भी उसके अनुसार घटाई-बढ़ाई जाती है। तार पीतल या लोहे के होते हैं जो ऊपर की मोरनियों से लपेटे जाकर नीचे बने छेदों से जोड़े जाते हैं।

सुरमंडल

याद पड़ता है, उदयपुर के शिल्पग्राम समारोह में सम्भवत: 1994 के दिसम्बर में सुरमंडल वादक चांदणखां से भेंट हुई थी। अपने सुरमंडल को स्वर देते चांदणखां स्वयं ही बेखबर नहीं हुए, श्रोताओं को भी एक निराली अलोप दुनिया में पहुंचा दिया।

जैसलमेर के कनोई गांव निवासी चांदणखां ने अपने चाचा सादकखां से सुरमंडल बजाना सीखा। इसका बजाना बहुत कठिन अभ्यास मांगता है। इस कारण अब बजानेवाले ही नहीं रहे। जब प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी उधर गई तो सादकखां तथा पिता मुरादखां ने अपने गांव में एक सुरमंडल भेंट किया था।

सादकखां के पिता अरबेखां विभाजन के समय पाकिस्तान चले गये तो वे अपना सुरमंडल यहीं छोड़ गये जो बड़ी दुर्दशा लिए था तब उसे वहीं गांव के सत्तूराम खाती से नया सुरमंडल तैयार करवाया।

चांदणखां देश के सभी बड़े-बड़े शहरों में सुरमंडल बजा चुके हैं। जब 1987 में रूस में भारत महोत्सव आयोजित हुआ तब इन्होंने सरकार की ओर से वहां भाग लिया और सुरमंडल से अच्छी पैठ जमाई। चांदणखां सुरमंडल पर छह रागों-भैरव, धानी, गूढ़ मल्हार, मारू, सोरठ तथा सुहब और इनकी पांच-पांच रागिनियों के स्वर निकालने में उस्ताद हैं।

सुरमंडल बजाते वे लोकगीतों की जांगड़ा, भवन, सबला, बनड़ा, हालरिया,डोढ़ा, पिणहारी स्वर-लहरियां बड़ी मिठास के साथ पेश कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करने में भी पीछे नहीं रहे। वे भजन गाने में भी कमाल हैं। ढोलक, मोरचंग, खड़ताल बजाकर भी इन्होंने कमाल दिखाया

चांदणखां के अनुसार उनके पिता सादकखां सारंगी तथा कमायचा भी अच्छा बजाते हैं। कनोई में पीरूखां, जलालखां, घेवरखां, सुमानखां, बरकतखां के अपने-अपने दल हैं। अपने यजमानों के वहां भी ये लोग ब्याह-शादी, बालजन्म, तीज-त्यौहार तथा अन्य खुशी एवं मंगल अवसरों पर बजाकर दातारी, नेग, दान-दक्षिणा प्राप्त करते हैं। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन केन्द्रों पर भी ये लोग समय-समय पर बुलाये जाते हैं पर अब सुरमंडल बजाने का काम छूटता जा रहा है। इसे सीखने कोई आगे आने वाला नहीं है। सरकार तथा संस्कृति से जुड़े संस्थान चाहें तो इसके संरक्षण के उपाय खोज सकते हैं। हम तो बेबस हैं।

नड़ :

नड़ का नाम लेते ही करणा भील की स्मृति ताजा हो जाती है जो नड़ वादन की दृष्टि से बेजोड़ कलाकार सिद्ध हुआ। भारतीय लोककला मण्डल में आयोजित लोकानुरंजन समारोह में नड़ वादक करणा का नाम सुनते ही पूरा शहर उसे देखने-सुनने को उमड़ पड़ा था।

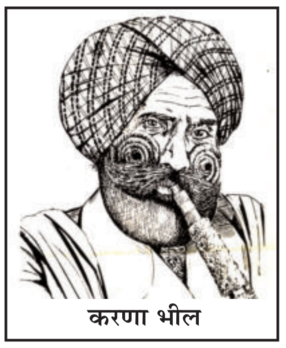

करणा भील

वह लम्बी मूंछें रखता और अपने सिर पर भी मंदरनुमा खांचे में भगवान को बिठाये रखता। जैसा वह नड़ वादन को समर्पित था वैसा ही भगवान की सेवा-पूजा के लिए प्राणप्रण एक किये था। उसने गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकार्डस् में अपना नाम भी दर्ज करवाया। वह डाकू भी जबर्दस्त था पर कहता कि भारत में कभी डाका नहीं डाला और न किसी महिला से ही छेड़खानी की। करणा से मैंने एक लम्बे साक्षात्कार में बहुत सारे सवालों की दिलचस्प जानकारी ली जो कादम्बिनी में भी छपी।

करणा के बाद संगीत नाटक अकादमी के एक समारोह में आमदखां फकीर से मेरी भेंट भी बड़ी दिलचस्प रही। आमदखां बाड़मेर जिले की चौहटन तहसील के रवासर गांव का रहने वाला था। यों वह दर्से मुसलमान हैं जो मुसलमानों की जाति-बिरादरी में पोथी पढ़ने का काम करते हैं और उनकी शादी में शरीक होना शुभ माना जाता है।

आमदखां ने नड़ वादन अपने काका हबीब और पिता मोहम्मद अली से सीखा। दादा हाशम और पड़दादा अयूब भी अच्छे नड़ वादक थे जिनकी सोहरत सिंध प्रांत तक फैली हुई है। आमद अपने कंधे पर लटकती चमड़े की बनी लम्बी गोल थैली में ढाई-तीन फीट लम्बी बांसुरीनुमा नड़ को बहुत हिफाजत के साथ सम्हाले रखता है।

कहता है, यह सौ वर्ष पुरानी है। इसे रखते मैं अपने बापदादों का संरक्षण लिये महसूस करता हूं। यह ऐसे ही नहीं बजती। पूरी बैठक कर इस पर मैं अपनी अंगुलियों को तैराता हूं और लम्बी सांस के सहारे रागें निकालता हूं। यह कह उसने राग राणेखां और लाली लाछिया की धुन निकाली। बोला, पेट की आंतड़ियों पर जोर डालने से नड़ खुलती है। जितना जोर डालते जाओगे, यह खुलती जायेगी फिर तो जितनी धुनें निकालो, निकालते जाओ और उसमें मस्त हो जाओ।

नड़ को वह बड़ी हिफाजत से सम्भाले इसलिए भी रखता है कि उसके कोई संतान नहीं होने से वह इसे ही अपनी औलाद और इसे ही अल्लाह मानता है। बोलता है, सौ वर्ष पुरानी नड़ ही मेरा पेट नहीं भर पाई तो फिर अल्लाह को किस रूप में याद करूं!

आकाशवाणी पर वह पाकिस्तान के नड़ वादकों को सुनकर कहता है कि वहां कहेरी मुसलमान मीरपुर, हैदराबाद, कराची, डिमरी शहरों में नड़ वादन की परम्परा को बनाये हुए हैं। आमद खुद है कि इसका कोई शागीर्द नहीं। वह दूसरा वादक तैयार कर उसे क्यों दु:खी बनायेगा जब स्वयं की फकीरी में जी रहा है पर अपने पास रखी नड़ की वह दुर्गत नहीं देखना चाहता सो कहता है, यही तमन्ना है कि यह समाज के बीच कहीं सुरक्षित रखी रहे ताकि लोग इसे देख मेरी तथा मेरे पूर्वजों की याद करते यह उम्मीद करें कि कभी-न-कभी तो कोई अयूब या आमद आयेगा जो नड़ को अपने पेट पालने का जरिया बनाते पूरे विश्व की आंखों को इस पर टिकायेगा। -क्रमश:

रंगों की दुनिया के गौरव गजेन्द्रसिंह

-डॉ. तुक्तक भानावत-

जब से घर-गांव की जगह शहर-संस्कृति का बोलबाला चला है तब से बंगला, हवेली, होटल, मॉल, कॉम्पलेक्स संस्कृति से शहर का सौन्दर्य बढ़ा है। इनकी खूबसूरती, इनकी अपने-अपने रंग-ढंग की बनावट तो है ही पर उसमें चार चांद लगाती सजावट और उसके साथ दीवारों, लकड़ी के बने भांति-भांति के फर्नीचर तथा अन्य उपकरण तथा लोहे से निर्मित उपयोगी वस्तुएं भी अपने जड़ाव से उस स्थल को कई गुना बेहतरीन बनाती हैं। इन सबके साथ इन सारे उपयोगी पक्षों को उन पर लगी विविध रंगों की कलात्मक परतें एक अलग अन्दाज से सुरमई हुई लक्षित होती हैं। सच तो यह है कि रंगरोगन के अभाव में क्या दीवारें, क्या लकड़ी से निर्मित वस्तुएं और क्या लोहा निर्मित उपकरण अधकचरे टाटले टोटले ही लगते हैं।

यहीं से गजेन्द्रसिंह भदोरिया का कार्य-करिश्मा प्रारम्भ होता है। सन् 1975 में मध्यप्रदेश के भिंड में जन्मे गजेन्द्र 1993 में रंग का काम करने वाले ठेकेदार के साथ उदयपुर आ गये। उनके साथ 6 वर्ष काम कर रंग करने की बारीकियां समझीं। इससे ठेकेदार का विश्वास तो जीता ही, ये स्वयं भी सीखने की लग्न तथा कठिन परिश्रम के कारण होशियार हो गये और धीरे-धीरे अपने ठेकेदार बॉस की कृपापूर्ण रजामन्दी से अलग से ठेकेदारी का कार्य करने लग गये।

गजेन्द्रसिंह सुनाते हैं, अपना काम परमेश्वर का काम समझकर ईमानदारी से सामने वाले को पूरा संतुष्ट कर विश्वास अर्जित करो तो अच्छा काम अपनेआप बजता है और गुडविल से काम मिलता रहता है। जहां काम करेंगे वही दस काम दिलायेगा। ऐसा करते मेरे पास अभी 5 व्यक्ति काम कर रहे हैं। उन्हें मैं प्रतिमाह 10 हजार से 25 हजार तक मासिक देता हूं। अपने साथ रख खानेपीने चायपानी की सारी व्यवस्था मेरी ओर से रहती है। मैं भी उनके साथ रहता हूं।

जहां भी काम होता है, मैं उन्हें अपनी ओर से पहुंचाने की व्यवस्था करता हूं या स्वयं अपनी गाड़ी से छोड़ता हूं। जहां जैसा काम होता है, उसके अनुसार उन्हें काम पर लगा देता हूं। जहां काम लेता हूं सम्पूर्ण ठेका, रंग, ब्रश से लेकर प्लाई, डीको पेन्ट, पियुपेन्ट आदि सबका जिम्मा मेरा रहता है।

गजेन्द्र बताते हैं कि नये-पुराने सभी तरह के मकानों, होटलों, कॉम्पलेक्सों में काम करते अनुभव हो जाता है कि कहां कितना रंग, कितने ब्रश, कितनी रंग की परतें चढ़ानी होंगी। साइज एवं उपकरण के अनुसार ब्रश चलाने पड़ते हैं। अलग-अलग रंग हो या कि मिक्स रंग हो, मजदूरी में कोई फर्क नहीं पड़ता मगर रंगों की कीमत अलग-अलग होती है। स्टेंडर्ड की कम्पनी वाला रंग ही काम में लिया जाता है। वही रौनक बढ़ाता है और टिकाऊ भी होता है। लकड़ी, दीवाल तथा लोहे पर के रंग के चार्जेज जुदा-जुदा होते हैं।

पूछने पर गजेन्द्रसिंह ने बताया कि मैं प्रारम्भ में अपने साथ अपने ही समधी साला साहब, साढ़ू साहब और दामादजी को लाया। कुछ समय साथ में काम करने के बाद तीनों ने अलग-अलग काम सम्भाल लिया। अब वे स्वयं ठेकेदार हैं। इससे ज्यादा खुशी और क्या हो सकती है। मैं भी तो ऐसे ही बना हूं। सब अपनी-अपनी किस्मत लेकर आते हैं। हमारा काम सबके साथ हेलमेल, भाईचारा और विश्वास बनाये रखना है। काम आगे-से-आगे मिलता रहता है। चालचलन नेक और नियत साफ हो।

विदेशों में पुतली परम्परा

-अरविंद कुमार -

नाट्य परम्परा का आदि रूप है- कठपुतली और इसका उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, अपितु सामाजिक, धार्मिक मान्यताओं और विश्वासों का चित्रण करना भी है। कठपुतली भले ही निर्जीव वस्तु है लेकिन इसके हाथ-पांवों और शरीर के विभिन्न हिस्सों में गति देकर इसे सजीवता प्रदान की जाती है।

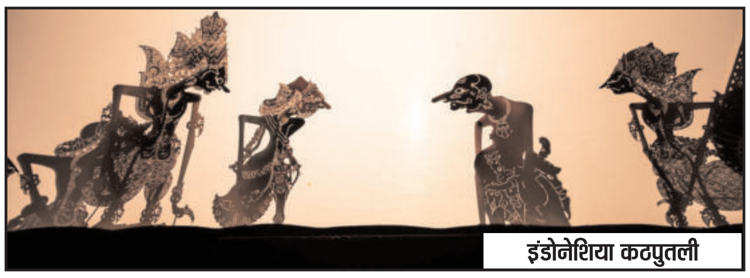

इंडोनेशिया कठपुतली

कंबोडिया कठपुतली

रामलीला की कठपुतली परम्परा दक्षिण भारत से होती हुई दक्षिण एवं पूर्व एशिया के देशों में पहुंची। कंबोडिया, थाईलैण्ड, इंडोनेशिया और मलेशिया में यह आज भी विविध रूपों में मौजूद है। इन सभी देशों में सर्वाधिक आकर्षक है इंडोनेशिया के बाली और जावा द्वीपों की 'वायांग कठपुतली परम्परा' जो वहां की नाट्य-परम्परा से मेल खाती है।

थाईलैंड कठपुतली

कठपुतली प्रदर्शन के दौरान जो अनुष्ठान और कर्मकाण्ड किये जाते हैं, वे भारतीय परम्परा से मिलते-जुलते हैं लेकिन प्रतीकात्मक और शैलीगत दृष्टिकोण से यह इण्डोनेशिया परम्पराओं और मान्यताओं के ज्यादा नजदीक है। लयबद्ध पदों के गायन और संगीत की सुमधुर ध्वनि के वादन के साथ कलाकार जब कठपुतली को गति प्रदान करता है तो एक आलौकिक दृश्य उपस्थित हो जाता है और दर्शक पारलौकिक शक्ति की कल्पना करने लगता है।

थाईलैण्ड में बड़ी-बड़ी कठपुतलियों के प्रयोग की परम्परा अब समाप्तप्राय: है लेकिन छोटी कठपुतलियों का प्रयोग आज भी इस देश के दक्षिणी भाग में रामलीला के दौरान होता है। 18वीं सदी के बहुत पहले से ही यह परम्परा वहां विद्यमान है।

मलेशिया में रामायण का प्रभाव अब केवल कठपुतली छाया-नाटकों में ही मिलता है। छाया-नाटक परम्परा से बहुत मिलती-जुलती है, यद्यपि इसमें प्रचलित लोकविश्वासों का समावेश भी मिलता है।

मलेशिया कठपुतली

बंबोडियाई रामलीला में बड़ी-बड़ी और आकर्षक कठपुतलियां प्रयुक्त की जाती हैं जो प्रतिमा शास्त्र के दृष्टिकोण से तथा वस्त्र सज्जा और अलंकरण की दृष्टि से भी प्राचीन अंकोरवाट की मूर्तियों की तरह लगती हैं।

बाजार / समाचार

शिविर में 750 से अधिक रोगियों का परीक्षण

उदयपुर (ह. सं.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस) उमरड़ा के तत्वावधान में विशाल मेडिकल कैम्प सांवरियाजी, चित्तौड़गढ़, बिजोलिया, माण्डलगढ़, लाड़पुरा, नीमच, मन्दसौर, भादसोड़ा, कपासन, बेगू में आयोजित किया गया जिसमें 750 से अधिक रोगियों का परीक्षण कर दवाएं दी गई और दीर्घकालीन रोगियों को भर्ती व अग्रिम उपचार की सलाह दी गई। शिविर का शुभारंभ साई तिरूपति विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. जे. के. छापरवाल ने किया। डॉ. छापरवाल ने बताया कि भविष्य में संभाग के अन्य जिलों व कस्बों में निशुल्क शिविर आयोजित किये जायेंगे। शिविर में वरिष्ठ प्रोफेसर ऑर्थोपीडिक्स डॉ. बी. एल. कुमार, डॉ. विक्रमसिंह राठौड़, डॉ. अनुराग पटेरिया, डॉ. लक्ष्मीनारायण मीणा, डॉ. पी. पी. शर्मा, डॉ. विवेक पराशर, डॉ. शिवांगी शर्मा, डॉ. चारू पूर्बिया, डॉ. आशीष खिवसरा, राजेश चौबीसा, नारायणलाल तथा मुख्य आयोजक धर्मेंद्र टाँक सहित 50 से अधिक चिकित्सकों ने भाग लिया।

मोटोरोला ने रेजर 40 अल्ट्रा और रेजर 40 लॉन्च किए

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के बेहतरीन 5जी स्मार्टफोन ब्रैंड और फ्लिप फोन के निर्माण में सबसे आगे रहने वाली कंपनी, मोटरोला ने भारतीय स्मार्टफोन के बाजार में एक बार फिर तहलका मचा दिया है। कंपनी ने अपनी फ्लैगशिप रेजर स्मार्टफोन सीरीज में मोटोरोला रेजर 40 अल्ट्रा और रेजर 40 लॉन्च किए हैं। मोटोरोला ने बॉलीवुड की प्रमुख अभिनेत्री कृति सेनन को लॉन्च इवेंट में अपना नया ब्रैंड एंबेसेडर बनाने की घोषणा की।

रेजर 40 अल्ट्रा फोन इंडस्ट्री का सबसे पतला फोल्ड किए जाने योग्य स्मार्टफोन है। इसमें ताकतवर स्नैपड्रैगन0 8+जेन 1 मोबाइल प्लेटफॉर्म, प्रभावी बैटरी और किसी भी फ्लिप फोन में सबसे बड़ा बाहरी डिस्प्ले है। यह हैरतअंगेज बाहरी डिस्प्ले 3.6 इंच की पोलेड स्क्रीन के साथ आता है। यह फोन बंद रहने के बाद भी कई ऐप्स और फंक्शन को सपोर्ट करने में सक्षम है। इसके अलावा 144 हर्ट्ज की अनुकूल रिफ्रेश रेट के साथ यह बड़े डिस्प्ले पर यूजर काफी आसानी से एक ऐप से दूसरी ऐप में जा सकते हैं और वेबसाइट्स को सहजता से स्क्रॉल कर सकते हैं। यह बड़ा डिस्प्ले 1100 निट्स की सबसे तेज चमक के साथ आता है, जिससे सूरज की तेज रोशनी में मोबाइल की स्क्रीन आसानी से देख सकते हैं।

हिंदुस्तान जिंक ने 4500 से अधिक पौधे लगाए

उदयपुर (ह. सं.)। वन महोत्सव के तहत् हिंदुस्तान जिंक ने पर्यावरण संरक्षण में योगदान हेतु उल्लेखनीय पहल कर परिचालन इकाइयों में सघन पौधरोपण अभियान की शुरूआत की। इसके तहत कंपनी ने जिंक स्मेल्टर देबारी, चंदेरिया स्मेल्टिंग कॉम्प्लेक्स और जावर ग्रुप ऑफ माइंस के आसपास के क्षेत्र में 4500 से अधिक पौधे लगाए और आमजन को पेड़ों और जंगल के महत्त्व पर जागरूक कर अधिक से अधिक पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित किया।

अभियान के दौरान जिंक के कर्मचारियों ने गुलमोहर, पलाश, पीपल, अमलतास सहित विभिन्न प्रजातियों के पौधरोपण किए जो कि पर्यावरण संरक्षण में सहायक होंगे। जिंक ने 2025 के लिए अपने स्थिरता विकास लक्ष्यों के अनुरूप, वित्त वर्ष 23-24 में अपनी सभी परिचालन इकाइयों में 1.96 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य रखा है। कंपनी के सस्टेनेबल लक्ष्यों में दस लाख पेड़ों का रोपण शामिल है जिसे जल्द पूरा करने हेतु प्रतिबद्ध है।

युवाओं के लिए आईस्टार्ट आइडियाथॉन 6 शहरों में शुरू

उदयपुर (ह. सं.)। आईस्टार्ट, डिपार्टमेंट ऑफ इनफ़ॅर्मेशन टेक्नोलॉजी एंड कम्युनिकेशन राजस्थान सरकार द्वारा, अपने इंक्यूबेटेड स्टार्टअप्स, स्टडीबेस, टिंकरली और कोडविद्या के सहयोग से आईस्टार्ट आइडियाथॉन का आयोजन किया जा रहा है। यह एक युवा स्टार्टअप उत्सव है जो राजस्थान के स्कूल और कॉलेज स्तर के छात्रों के लिए आयोजित हो रहा है। आईस्टार्ट आइडियाथॉन को योजना भवन, जयपुर, में शुरू किया गया। आइडियाथॉन की श्रृंखला 5 अगस्त से उदयपुर से शुरू होगी और यह राजस्थान के अन्य आइस्टार्ट शैक्षणिक विभाजनों, बीकानेर, कोटा, जोधपुर, जयपुर और भरतपुर, को सम्मिलित करेगी। आयोजन के दौरान, आशीष गुप्ता, आयुक्त और संयुक्त सचिव, डिपार्टमेंट ऑफ इनफ़ॅर्मेशन टेक्नोलॉजी एंड कम्युनिकेशन राजस्थान ने कहा कि आज के युवा ज्ञान के बहुतायत शक्ति रखते हैं और वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने में सक्षम हैं। आईस्टार्ट आइडियाथॉन युवाओं के बीच नवाचार और उद्यमिता की संस्कृति को विकसित करने के लिए राजस्थान सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है।

आईस्टार्ट आइडियाथॉन राजस्थान के सरकारी और प्राइवेट स्कूल और कॉलेज के छात्रों के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया है, जो उन्हें अपने नवाचारी विचारों और उद्यमी भाव को प्रदर्शित करने का एक अद्वितीय अवसर प्रदान करता है। इस आयोजन में छात्रों को उद्योग विशेषज्ञों, मेंटरों, और समान सोच वाले साथियों के साथ संगठन, नेटवर्किंग और महत्वपूर्ण ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। इसमें भाग लेने के बाद, छात्रों को अद्वितीय पुरस्कारों की प्रतीक्षा होगी, जिसमें कुल 8.4 लाख रुपये की पुरस्कार राशि है।

नाहर उपमहानिदेशक पद पर पदोन्नत

उदयपुर (ह. सं.)। भारतीय प्रसारण सेवा के 1994 बैच के वरिष्ठ अधिकारी राजेन्द्र नाहर को सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा उपमहानिदेशक पद पर पदोन्नत किया गया है। साथ ही नाहर को आकाशवाणी महानिदेशालय ने उपमहानिदेशक पद पर आकाशवाणी उदयपुर पर ही पदस्थापित किया गया है। नाहर आकाशवाणी उदयपुर के साथ ही दक्षिण राजस्थान में स्थित कुल छह आकाशवाणी केन्द्रों का प्रभार देखेंगे।

उल्लेखनीय है कि नाहर के नेतृत्व में आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों को कई बार राष्ट्रीय स्तर/ जोनल स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुरक्षित केन्द्रों के प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। नाहर के नेतृत्व में राज्य के दक्षिण अंचल के प्रमुख केन्द्र आकाशवाणी उदयपुर को कई प्रतिष्ठित सम्मेलनो के आयोजनों का अवसर भी प्रदान किया जाता रहा है। इस अवसर पर केन्द्र के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने नाहर का बहुमान किया।

फतेहसिंह राठौड़ शहर जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष नियुक्त

उदयपुर (ह. सं.)। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा उदयपुर शहर जिला कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष फतेहसिंह राठौड़ को नियुक्त किया गया। इस नियुक्ति पर पूरे उदयपुर शहर में कांग्रेस कार्यकर्ताओं एवं आम जनता में भारी हर्ष का माहौल है। सभी कार्यकर्ताओं ने एक स्वर में कहा कि हमारे बीच के व्यक्ति को कांग्रेस पार्टी ने जिम्मेदारी दी है जिसे हम सब मिलकर तन मन धन से निभाते हुए आगामी सभी चुनाव में कांग्रेस पार्टी को उदयपुर से विजय दिलाएंगे।

नवनियुक्त अध्यक्ष राठौड़ ने इस नियुक्ति पर शीर्ष नेतृत्व का और प्रदेश नेतृत्व का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मेरे जैसे छोटे कार्यकर्ता को जिला अध्यक्ष पद का दायित्व देखकर शीर्ष नेतृत्व ने जो विश्वास व्यक्त किया है उस पर मैं सभी कार्यकर्ताओं और उदयपुर की जनता के साथ से खरा उतरने का प्रयास करूंगा। नियुक्ति की घोषणा के पश्चात राठौड़ ने बेदला माताजी, महाकाल मंदिर, जगन्नाथ स्वामी, जगदीश चौक मंदिर में भगवान के दर्शन कर आशीर्वाद लिया तत्पश्चात सभी दिवंगत नेताओं की समाधि पर जाकर श्रद्धा सुमन अर्पित कर आशीर्वाद लिया। इस मौके पर जगदीश चौक एवं चेटक सर्कल पर भव्य आतिशबाजी की गई।

इससे पूर्व फतेहसिंह राठौड़ ने कांग्रेस कार्यसमिति सदस्य रघुवीरसिंह मीणा से उनके आवास पर मुलाकात कर आभार व्यक्त किया। श्री मीणा ने नवनियुक्त अध्यक्ष को शुभकामनाएं दी एवं उम्मीद जताई कि राठौड़ के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी आने वाले चुनाव में जीत दर्ज करेगी।

स्वास्थ्य सेवाएँ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचनी चाहिए : ओम बिरला

उदयपुर (ह. सं.)। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने मंगलवार को उदयपुर में गीतांजलि विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में छात्रों को संबोधित किया। श्री बिरला ने छात्रों को उनकी शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए बधाई दी तथा शिक्षा और चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में गीतांजलि विश्वविद्यालय के योगदान की सराहना की। उन्होंने छात्रों को बताया कि उदयपुर और मेवाड़ दोनों वीरता, स्वाभिमान और बलिदान के पर्याय हैं और इसी प्रकार छात्रों को भी अपने जीवन में अपने मूल्यों पर अडिग रहना चाहिए।

शिक्षा के क्षेत्र में गीतांजलि विश्वविद्यालय के योगदान का उल्लेख करते हुए, श्री बिरला ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में उत्कृष्टता को बढ़ावा देने और भावी पीढ़ियों के लिए एक मजबूत नींव तैयार करने की दिशा में विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। श्री बिरला ने इस बात की सराहना भी की कि संस्थान आधुनिक तकनीक और सुविधाओं से सुसज्जित 1500 बिस्तर वाले लोकप्रिय अस्पताल के माध्यम से लाखों लोगों को इलाज प्रदान कर रहा है और अपने आदर्श वाक्य 'स्वास्थ्य की खुशी सबसे बड़ी खुशी' की भावना को मूर्त रूप दे रहा है।

उन्होंने कहा कि हमारे समाज में चिकित्सा विज्ञान की डिग्री को बहुत सम्मान के साथ देखा जाता है। एक चिकित्सक के रूप में उन्हें समाज में अपनी भूमिका और योगदान के प्रति सचेत रहना चाहिए और जब तक स्वास्थ्य सेवाएँ समाज के अंतिम व्यक्ति तक नहीं पहुंच जाती, तब तक उन्हें इस दिशा में अथक प्रयास करते रहना चाहिए। उन्होंने छात्रों को समाज की भलाई और कल्याण में योगदान देकर अपनी शिक्षा का सदुपयोग करने की सलाह दी। श्री बिरला ने सुझाव दिया कि यदि स्वास्थ्य से संबंधित कोई भी विधेयक संसद या राज्य विधानसभा में पेश किया जाता है, तो युवाओं को इस बारे में अपने विचार व्यक्त करने चाहिए क्योंकि राष्ट्र को उनके ज्ञान और अनुभव से लाभ होगा।

इस अवसर पर एमबीबीएस, फार्मेसी, नर्सिंग, डेंटल, फिजियोथेरेपी के 42 गोल्ड मेडल्स एवं 511 ग्रेजुएट्स, पोस्ट ग्रेजुएट व पीएच.डी. विद्यार्थियों को डिग्रीयां प्रदान की गयी। साथ ही डॉ. सुनंदा गुप्ता, डॉ. ए.के गुप्ता एवं डॉ. अब्बास अली सैफी को उनके चिकित्सा क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

समारोह में गीतांजलि विश्वविद्यालय उदयपुर के कुलाधिपति जे.पी. अग्रवाल, एम्स, नई दिल्ली के पूर्व निदेशक, पद्मश्री डॉ. रणदीप गुलेरिया, वाइस चेयरमैन कपिल अग्रवाल, एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अंकित अग्रवाल, गीतांजली यूनिवर्सिटी के वाईस चांसलर डॉ. एफ एस मेहता, रजिस्ट्रार मयूर रावल उपस्थित थे।

जोशी लघु उद्योग भारती के अध्यक्ष बने

उदयपुर (ह. सं.)। लघु उद्योग भारती उदयपुर की सातों इकाइयों के चुनाव वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गनिर्देशन में संपन्न हुए। निवर्तमान अध्यक्ष मनोज जोशी पुनः सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गए। कपिल सुराणा सचिव तथा यशवंत मंडावरा कोषाध्यक्ष चुने गए।

कलड़वास इकाई के अध्यक्ष अभिमन्युसिंह राठौड़, सचिव अभिजीत शर्मा व कोषाध्यक्ष राकेश काबरा, मादड़ी इकाई के अध्यक्ष हेमंत जैन, सचिव अरुण बया तथा कोषाध्यक्ष प्रकाश फुलानी, सुखेर इकाई के अध्यक्ष रोबिन सिंह, सचिव राजेश शर्मा, कोषाध्यक्ष हरीश कुमावत, गुडली इकाई के रवि शर्मा अध्यक्ष, दीपक हरकावत सचिव तथा कैलाश शर्मा कोषाध्यक्ष, महिला इकाई अध्यक्ष डॉ. सीमा पारिख, सचिव रेखारानी जैन तथा कोषाध्यक्ष भुवनेश्वर वैष्णव निर्वाचित हुई।

गिर्वा इकाई का गठन विगत माह ही राष्ट्रीय संगठन मंत्री प्रकाशचंद्र, राष्ट्रीय महामंत्री घनश्याम ओझा व प्रांत अध्यक्ष योगेन्द्र शर्मा के सानिध्य में हुआ जिसमें हरिओम शर्मा अध्यक्ष, सिद्धार्थ लड्ढा सचिव तथा गौरव जैन कोषाध्यक्ष चुने गए थे। निर्वाचन प्रदेश मंत्री रीना राठौड़, प्रांत कार्यकारिणी सदस्य पिंकी मांडावत, महेंद्र मांडावत तथा उदयपुर लघु उद्योग भारती के संरक्षक राकेश वर्डिया, तथा महिला इकाई संरक्षक रजनी डांगी के मार्गनिर्देशिका में संपन्न हुए।

मनोज जोशी ने बताया कि शीघ्र ही सभी इकाई अध्यक्ष अपनी अपनी कार्यकारिणी मनोनीत करेंगे। साथ ही उद्योगों को हो रही विभिन्न समस्याओं के त्वरित निराकरण तथा सरकारी विभागों से चर्चा व समन्वय हेतु समितियों का भी गठन करेंगे। पूर्व महापौर रजनी डांगी ने लघु उद्योग भारती के गठन तथा उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि देश भर में 501 जलों में 777 इकाइयाँ हैं जिसमें 33 महिला इकाइयाँ हैं तथा 45000 से ज़्यादा लघु उद्यमी सदस्य हैं।

शिल्पकार पद्मश्री मोहनलाल कुम्हार का निधन

उदयपुर (ह. सं.)। मोलेला मृणशिल्प को विश्वभर में पहचान दिलाने वाले शिल्पकार पद्मश्री मोहनलाल कुम्हार (84) का 07 जुलाई को निधन हो गया। मोहनजी पिछले छह माह से बीमार चल रहे थे। उन्हें पैरालिसिस का अटैक आया था। शुक्रवार देर रात उन्होंने मोलेला अपने पैतृक आवास पर ही अन्तिम स्वांस ली। दोनों पुत्रों दिनेश और राजेन्द्र ने उन्हें मुखाग्नि दी। उल्लेखनीय है कि मोहनलाल कुम्हार ने टेराकोटा आर्ट को न केवल राजस्थान बल्कि दुनियाभर में अलग पहचान दिलाई। वर्ष 2012 में तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभादेवी पाटिल ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया था।

राजस्थान और मध्यप्रदेश से जुड़े मुद्दों पर राज्यपालों की संयुक्त बैठक
आंतरिक सुरक्षा, अपराध नियंत्रण एवं विकास से जुड़े मुद्दों पर हो प्रभावी कार्य : श्री मिश्र

उदयपुर (सुजस)। राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र ने कहा है कि राजस्थान और मध्यप्रदेश में राजस्व विवादों के संबंध में सर्वे हो चुका है। इस संबंध में अधिकारी अब इस आधार पर उसके प्रभावी क्रियान्वयन को सुनिश्चित करें। उन्होंने मध्यप्रदेश और राजस्थान के सीमावर्ती जिलों के अंतर्गत भारत सरकार तथा राज्य सरकार की विकास योजनाओं, विशेष रूप से स्वास्थ्य संबंधित योजनाओं का समान रूप से लाभ दिए जाने का सुझाव भी दिया है। उन्होंने दोनों राज्यों की राज्य सरकार द्वारा क्रियान्वित बालिका शिक्षा, चिकित्सा, जनजाति कल्याण और अन्य विकास योजनाओं का लाभ समान रूप से दोनों राज्यों के सीमावर्ती जिलों के लोगों को कैसे मिले, इस पर भी प्रभावी सोच रखते हुए कार्य करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि बहुत से मामलों में दोनों राज्यों के अंतर्गत जातिगत आधार पर कई बार जो मुद्दे और विवाद होते हैं, उन पर समझाइश से प्रभावी स्तर पर समस्याओं का हल किए जाने की भी आवश्यकता है।

राजस्थान और मध्य प्रदेश के राज्यपाल मंगूभाई पटेल की संयुक्त अध्यक्षता में 07 जुलाई को उदयपुर के संभागीय आयुक्त कार्यालय में इस संबंध में महत्वपूर्ण बैठक हुई। बैठक में राज्यपाल मिश्र ने कहा कि उन्हें बहुत से स्तरों पर ऐसे मामलों के बारे में जानकारी मिलती है कि दोनों राज्यों की सीमा पर कहीं किसी प्रकार की दुर्घटना या लोगों की अकाल मृत्यु हो जाती है तो ऐसे मामले में स्थान निर्धारण को लेकर अनिर्णय की स्थिति में आमजन को बहुत परेशानी होती है। ऐसे मामलों में पोस्टमार्टम और अन्य प्रकार के अनुसंधान के संबंध में दोनों राज्यों के अधिकारी परस्पर समन्वय रखकर संवाद से त्वरित मामलों का समाधान कर समुचित कार्यवाही करें। राज्यपाल मिश्र ने कहा कि चूंकि आने वाले समय में राजस्थान और मध्यप्रदेश में विधानसभा और लोकसभा के चुनाव होने है इसलिए सीमावर्ती जिलों में अतिरिक्त सतर्कता बरती जाए। आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था कैसे पुख्ता हो, इस पर अभी से विचार करें और अपराधियों को पकड़ने, अपराध रोके जाने के लिए पुलिस आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल करते हुए प्रभावी कार्य किया जाए।

राज्यपाल ने राजस्थान और मध्यप्रदेश से जुड़े सीमावर्ती जिलों में विकास के लिए परस्पर सहयोग से क्रियान्वित हो सकने वाले मुद्दों पर संवेदनशील होकर प्रभावी पहल कर कार्य किए जाने पर जोर दिया है। उन्होंने राज्यों के सीमावर्ती जिलों से जुड़े लंबित मुद्दों के समाधान और सीमावर्ती क्षेत्रों के निवासियों के विकास के लिए हर संभव प्रभावी प्रयास किए जाने की भी आवश्यकता जताई।

बैठक में मध्यप्रदेश के राज्यपाल मंगूभाई पटेल ने सीमावर्ती राज्यों के अधिकारियों द्वारा संयुक्त स्तर पर मिल बैठकर विकास से जुड़े मुद्दों पर एकमत होकर कार्य करने की आवश्यकता जताई ताकि बाद में किसी स्तर पर कार्य में किसी तरह की ढिलाई नहीं रहे।

राज्यपाल कलराज मिश्र ने सीमावर्ती क्षेत्र में आपराधिक गतिविधियों के नियंत्रण एवं रोकथाम, राजस्व एवं वन भूमि के सीमांकन, कामगार पलायन आदि की चर्चा करते हुए इस संबंध में समयबद्ध प्रभावी कार्य किए जाने पर जोर दिया। उन्होंने एक भारत श्रेष्ठ भारत के तहत सांस्कृतिक आदान-प्रदान के अंतर्गत लोक कलाकारों और लोक कलाओं को भी संरक्षण दिए जाने पर कार्य करने की बात कही।

राज्यपाल मिश्र ने कहा कि मध्यप्रदेश के 6 जिलों और राजस्थान के 9 जिलों की सीमाएं एक-दूसरे से लगती हैं। इन सीमावर्ती जिलों में अपराध और अवैध गतिविधियों पर नियंत्रण एवं रोकथाम के लिए कारगर सुरक्षा तंत्र विकसित किया जाए। उन्होंने सीमावर्ती जिलों के राजस्व सीमाओं के सीमांकन, वन भूमि पर सीमा निर्धारण के मुद्दों के उचित एवं नियमानुकूल समाधान की दिशा में भी कार्य किए जाने पर बल दिया।

राज्यपाल मिश्र और राज्यपाल मंगूभाई पटेल ने दोनों राज्यों के अंतर्गत लोगों द्वारा रोजगार के लिए पलायन की प्रवृत्ति को रोकने के उद्देश्य से राज्यों के भीतर ही रोजगार सुरक्षा के अवसर प्रदान करने के लिए नीति और योजनाओं का निर्माण किए जाने पर जोर दिया।

बैठक में राजस्थान के 9 जिलों और मध्यप्रदेश के 6 सीमावर्ती जिलों के प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारी शामिल हुए। बैठक में राजस्थान के राज्यपाल के प्रमुख सचिव सुबीरकुमार, प्रमुख विशेषाधिकारी गोविन्दराम जायसवाल, उदयपुर संभागीय आयुक्त राजेंद्र भट्ट, कोटा संभागीय आयुक्त डॉ. प्रतिभासिंह, पुलिस महानिरीक्षक उदयपुर अजयपाल लांबा, निदेशक (जनजाति कल्याण) एवं संयुक्त सचिव राज्यपाल डॉ. कविता सिंह, अतिरिक्त निदेशक (जनजाति कल्याण) खेमचंद वर्मा, मध्यप्रदेश से सामान्य प्रशासन विभाग के अपर मुख्य सचिव विनोदकुमार, राज्यपाल के प्रमुख सचिव डी.पी. आहूजा, राज्यपाल के उपसचिव स्वरोचिष सोमवंशी, राज्यपाल के विशेष सहायक विपुलचंद्र जे. पटेल साहित राजस्थान के बारां, झालावाड़, प्रतापगढ़, कोटा, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, सवाईमाधोपुर, बांसवाड़ा, करौली तथा मध्यप्रदेश के झाबुआ, रतलाम, मंदसौर, नीमच, शिवपुरी तथा श्योपुर जिलों के कलक्टर एवं पुलिस अधीक्षक शामिल हुए।

गहलोत सरकार हर दिन देगी 2.75 लाख के इनाम

जयपुर (सुजस)। राजस्थान की गहलोत सरकार अब अपनी योजनाओं के कॉन्टेस्ट करवा कर जनता को इनाम बांटेगी। वीडियो कॉन्टेस्ट के जरिए हर दिन 2.75 लाख रुपए के नकद पुरस्कार

बांटे जाएंगे। सीएम अशोक गहलोत ने इसकी शुरुआत कर दी है। एक महीने तक रोज इनाम बांटे जाएंगे। चुनावी साल में जनता के बीच योजनाओं के प्रचार करने के इस तरीके का सरकार ने पहले सोशल मीडिया पर खूब प्रचार किया है।

इस वीडियो कॉन्टेस्ट में सरकार की 10 फ्लैगशिप योजनाओं के बारे में सवाल होंगे। कॉन्टेस्ट में भाग लेने के लिए लाभार्थी को खुद का या महंगाई राहत कैंपों के लाभार्थियों से 10 प्रमुख योजनाओं पर सवाल- जवाब करते हुए वीडियो सोशल मीडिया पर सरकार को टैग करते हुए अपलोड करना होगा। इन वीडियो के जरिए सरकार ने अपनी योजनाओं का प्रचार आम लोगों से कराने की तैयारी की है।

इस वीडियो में सरकार की योजनाओं का नाम बताते हुए, उनसे जनता को कितना फायदा हो रहा है, यह बताना होगा। वीडियो में बताना होगा कि कैसे इन योजनाओं का लाभ मिल रहा है। वीडियो कॉन्टेस्ट के विजेताओं का फैसला ज्यूरी करेगी। सूचना और जनसंपर्क विभाग को इस वीडियो कॉन्टेस्ट का जिम्मा दिया गया है। हर रोज विजेताओं का चयन कर उन्हें इनाम दिए जाएंगे। वीडियो कॉन्टेस्ट के तहत प्रथम पुरस्कार के रूप में विनर को रोज एक लाख रुपए दिए जाएंगे। दूसरा पुरस्कार 50 हजार और तीसरा पुरस्कार 25 हजार रुपए का होगा। 100 लोगों को 1000-1000 रुपए के सांत्वना पुरस्कार दिए जाएंगे।

जानकारी को ज्ञान में तब्दील करने से ही विकसित होगी नेतृत्व क्षमता - ओम बिरला
राजनीतिक दलों को फ्लोटिंग वोटों के कारण पर करना होगा चिंतन : डॉ. सी पी जोशी

उदयपुर (ह. सं.)। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के व्यवसाय प्रबंधन विभाग के मास्टर ऑफ ह्यूमन रिसोर्सेज मैनेजमेंट के तत्वावधान में दो दिवसीय 'लीडरशिप कॉन्क्लेव-2023' मंगलवार को विवेकानंद सभागार में शुरू हुआ। पहले दिन लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला और विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी ने विद्यार्थियों को लोकतंत्र का अर्थ समझाते हुए नेतृत्व क्षमता विकसित करने के लिए जरूरी विविध पक्षों पर प्रकाश डाला।

मुख्य अतिथि लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि जानकारी और ज्ञान में अंतर होता है। जानकारी से नेतृत्व नहीं बनता केवल सूचना प्राप्त होती है, बल्कि ज्ञान हमें अनुभव की ओर प्रवृत्त करता है और नेतृत्वशील बनाता है। उन्होंने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और तकनीकी उन्नति के साथ ही जानकारियों का दायरा तो बढा रहा है लेकिन इस का सही सदुपयोग ही नौजवानों को नई दिशा दे पायेगा इसीलिए आज जानकारी को ज्ञान में तब्दील करना जरूरी है।

बिरला ने कहा कि भारत के मूल स्वभाव को साथ लेकर चलना जरूरी है जिसमें ज्ञान, संस्कृति, इतिहास, चिंतन आदि का समावेश होना चाहिए। उन्होंने कहा कि नेतृत्व कोई एक दिन में बनने की चीज नहीं होती बल्कि वह हर क्षण, हर पल और हर दिन दैनिक जीवन के निर्णय से बाहर निकल कर आता है। आजादी के आंदोलन का जिक्र करते हुए उन्होंने शहीदों को याद किया वहीं मेवाड़ की धरती को नमन करते हुए महाराणा प्रताप की नेतृत्व क्षमता का जिक्र करते हुए कहा कि दुनिया भर में महाराणा प्रताप को आदर और सम्मान की दृष्टि से याद किया जाता है। यह उनकी नेतृत्व क्षमता ही थी जो उनको पूरी दुनिया में पहचान दिलाती है।

बिरला ने कहा कि परस्पर संवाद, संवेदना और सहयोग से ही नए भारत का निर्माण होगा और अंतिम व्यक्ति तक के सहयोग से ही परिवर्तन की परिकल्पना बन पाएगी।

विशिष्ट अतिथि राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष

डॉ. सीपी जोशी ने कहा कि विधायिका का काम वॉच डॉग की तरह होता है लेकिन बहुत चिंता का विषय है कि केरल को छोड़कर पूरे देश में औसत सदन 20-25 दिन ही चल पाते है। सब लोग अपेक्षा करते हैं कि हम नीतियां बनाएं, क्वालिटी ऑफ गवर्नन्स की बात करें लेकिन संसदीय लोकतंत्र में यदि हाउस पूरे दिन नहीं चलेगा यह कैसे तय हो पाएगा कि हम गुणवत्ता पूर्ण लोकतंत्र की कल्पना को साकार करने में समर्थ होंगे। उन्होंने कहा कि आगे की चुनौतियों को समझना बहुत जरूरी है भविष्य कैसा होगा इसके लिए राजनीतिक दलों को बहुत ध्यान चिंतन करना होगा क्योंकि अगर इन चुनौतियों को हम आज नहीं समझ पाए तो दुनिया के सामने खड़े नहीं रह पाएंगे। उन्होंने कहा कि नेतृत्व को समझने के लिए हमें भारतीय परंपराओं में चुनावों को समझना होगा।

डॉ. जोशी ने कहा कि विधानसभा का स्पीकर शपथ नहीं लेता हालांकि वह बहुमत वाली पार्टी का विधायक होता है लेकिन निष्पक्षता से हाउस चलाने की जिम्मेदारी उसके कंधों पर होती है इसलिए स्पीकर को युवाओं का रोल मॉडल बनना होगा। उन्होंने युवाओं से कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस हमारे लिए नई चुनौतियां लेकर सामने खड़ी हुई है। आगे आने वाले समय में कई पेशे अप्रासंगिक हो जाएंगे।

कार्यक्रम के अध्यक्ष मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आईवी त्रिवेदी ने कहा कि एक अच्छे नेतृत्वकर्ता के लिए बहुत धैर्य की आवश्यकता होती है और यही धैर्य उसे जनता से कनेक्ट रखता है। एक वोट से हारने के बाद भी डॉ. सीपी जोशी एक गंभीर और धैर्यशील राजनेता की तरह सकारात्मक बने रहे और उन्होंने फिर से एक नई शुरुआत करते हुए दोबारा जीत दर्ज की। इसी धर्य की लीडरशिप में जरूरत होती है। भविष्य में जो नेता बनना चाहते हैं उन्हें वर्तमान नेताओं से सीखना होगा। तकनीक के साथ खुद का बदलाव करना भी बहुत जरूरी है। कार्यक्रम की शुरुआत में कॉनक्लेव डायरेक्टर प्रो. मंजू बाघमार ने कार्यक्रम की संकल्पना रखी। आयोजन सचिव डॉ. देवेंद्र श्रीमाली ने लीडरशिप कॉन्क्लेव के बारे में विस्तार से जानकारी दी। वाणिज्य महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. पी.के. सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

साहित्य अकादमी पुरस्कारों की राशि में होगी दस गुना बढ़ोतरी

उदयपुर (ह. सं.)। साहित्यकारों एवं लेखकों के लिए अच्छी खबर है कि यदि साहित्य अकादमी के प्रस्ताव को मंजूरी मिलती है तो अकादमी की ओर से दिये जाने वाले पुरस्कारों की राशि में अब दस गुना बढ़ोतरी हो सकती है। राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष दुलाराम सहारण ने इसके लिए मुख्यमंत्री से मांग की है। यह मांग पूरी होने पर राजस्थान में भी साहित्य अकादमी के पुरस्कारों की राशि अन्य राज्यों के समकक्ष हो जाएगी। प्रदेश में यह बढ़ोतरी ग्यारह साल बाद होगी। पुरस्कार राशि में अंतिम बढ़ोतरी वर्ष 2012 में हुई थी। उल्लेखनीय है कि अकादमी का पचहत्तर हजार रूपये की राशि का मीरां पुरस्कार सर्वोच्च पुरस्कार है।

दुलाराम सहारण ने बताया कि राजस्थान साहित्य अकादमी पहली ऐसी अकादमी है जिसने बकाया तीन सालों के पुरस्कार देने की घोषणा की है। इसके तहत वर्ष 2019-20, वर्ष 2020-21 तथा वर्ष 2021-22 के पुरस्कार दिये जायेंगे। जल्द ही नामों की घोषणा की जायेगी। वहीं लम्बे समय से साहित्यकारों द्वारा पुरस्कारों की राशि बढ़ाने की मांग की जा रही थी लेकिन इस पर कुछ नहीं हुआ था। अब मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को इस संबंध में अवगत कराया है और पुरस्कारों की राशि 10 गुना बढ़ाने की मांग रखी है। इसकी जल्द ही स्वीकृति की उम्मीद है। ऐसे में 75 हजार रूपये का पुरस्कार अब 7.5 लाख, 31 हजार रूपये के पुरस्कार 3.1 लाख और 21 हजार रूपये के पुरस्कार 2.1 लाख के हो जायेंगे।

कुलगुरु, गुरुकुल और हंसी का झरना

- बनवारीदत्त जोशी -

सन् 1950 के आसपास छोटीसादड़ी जैन गुरुकुल में हाईस्कूल के अध्ययन के दौरान शेषमल चोरड़िया हमारे ऐसे गुरुजन थे जिनसे हर समय ही हास्य का जैसे झरना झरता रहता था। उन्हीं से मुझ में चोर की दाढ़ी में तिनके की तरह हास्य ऐसा प्रविष्ट हुआ कि वह तिनका ऐसा तना बन आज भी विराजमान है जो हिलाये तो नहीं हिलता पर जिससे हास्य झरता रहता है।

तब वहां साप्ताहिक सभा हुआ करती थी। मैं कभी हेडमास्टर नेमिचन्दजी सुराणा के पहनने के कपड़े पहन कर अंग्रेजी की क्लास लेता हू-ब-हू सुराणा साहब की नकल करता कि नहीं हंसने वाले सुराणाजी भी लोटपोट हुए मिलते। कभी शोभाचन्दजी वया की धोती, कुरता, टोपी पहन हिन्दी पढ़ाता।

एक सभा में कवि दरबार लगा जिसमें मेरे सहपाठी डॉ. महेन्द्र के अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत 'प्रिय प्रवास' महाकाव्य के रचनाकार महाकवि अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' बने और मैं गड़बड़ कवि। नरेन्द्र ने अपने गले में 'हरिऔधजी' के नाम का बिल्ला लगाया और मैंने गड़बड़ कवि का। वहीं गुरुकुल के पुस्तकालय में एक पुस्तक 'गड़बड़ रामायण' थी। उसमें लिखे दो छन्द मैंने पढ़कर सुनाये तो पूरी सभा खिलखिला उठी। वहीं से मेरी हास्यरसी एक्सप्रेस चली जो आज भी अस्सी पार का संसार बन गुदगुदा रही है। वे छन्द थे-

पान खाय बीड़ी सुलगाई।
वन चले राम रघुराई।।
कृष्ण चले ब्रजभूमि को, राधा पकड़े बाँह।
कोयला यहां से ले चलो, वहां मिलेंगे नाँह।।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।